ॐ

तद्ध तद्वनं नाम तद्वनमित्युपासितव्यं स य एतदेवं वेदाऽभि हैन ँ सर्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति ।।६ ।।

ब्रह्म तद्वन (प्राणिमात्र का प्रापणीय) है। उसकी आराधना समस्त प्राणियों द्वारा की जानी चाहिए। जो ब्रह्म को इस प्रकार जानता है, उससे सभी व्यक्ति प्रेम करते हैं।

अनमोल मोती

हमारे बाल-पाठक ईश्वरोन्मुखी दिव्य जीवन व्यतीत करते हुए सबके सच्चे सेवक बन जायें, इस उद्देश्य से ६५ बाल-कहानियों का यह संग्रह प्रकाशित किया गया है। इस संग्रह की कहानियों का भाषा सरल है तथा शैली सरस। ये मानव-जीवन के सार्थक तथा दूसरों के लिए उपयोगी बनाने का मार्ग प्रशस्त करती हैं।

दिव्य जीवन संघ मुख्यालय की हिन्दी पत्रिका में प्रकाशित हो चुकी इन कहानियों के एक ही पुस्तक में संकलित कर अब बाल-पाठक इन्हें अपनी सुविधानुसार बार-बार पढ़ सकेंगे तथा सन्देशों को सरलतापूर्वक आत्मसात् कर सकेंगे।

बालकों को दिये जाने वाले उपहार के रूप में उपयोगी तथा बाल-पुस्तकालयों के लिए अमूल्य इस संग्रह की कहानियों की सराहना अभिभावकों ने भी की है। नव-दम्पत्ति भी अपनी भावी सन्तानों में अच्छे संस्कारों का बीजारोपण करने के लिए इन कहानियों का को उपयोगी पायेंगे।

अवश्यमेव पठनीय इन कहानियों के अनमोल मोती बाल-पाठकों की अमूल्य विधि के रूप में संग्रहमीय हैं।

ब्रह्मचर्य-साधना :

विवाह करें अथवा न करें ४

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

ब्रह्मचारी बनें अथवा गृहस्थ

कामुक लोगों के लिए ही गृहस्थाश्रम का विधान है; क्योंकि वे अपनी कामुकता पर नियन्त्रण नहीं रख सकते। यदि कोई व्यक्ति शंकराचार्य अथवा सदाशिव ब्रह्म की भाँति पर्याप्त आध्यात्मिक संस्कार, अन्तर्जात विवेक तथा वैराग्य के साथ उत्पन्न हुआ है, तो वह गृहस्थाश्रम में प्रवेश नहीं करेगा। वह तत्काल नैष्ठिक ब्रह्मचर्य अपनायेगा और तत्पश्चात् संन्यास ग्रहण कर लेगा। श्रुतियाँ भी इसका समर्थन करती हैं। जाबालोपनिषद् कहती है : ''**यदहरेव विरजेत्तदहरेव प्रव्रजेत्**ह्नह्नजिस दिन वैराग्य आये, उसी दिन संन्यास ले लीजिए।''

विवाह कुछ लोगों की आध्यात्मिक प्रगति में बाधा पहुँचाता है, तो कुछ लोगों की सहायता करता है। राजा भर्तृहरि के लिए यह बाधक था और सन्त तुकाराम के लिए यह सहायक था। अन्त में व्यक्ति एक ही लक्ष्य पर पहुँचता है। यात्रा सर्वाधिक छोटी होने दें। छोटे रास्ते को लम्बे मार्ग की अपेक्षा अधिक पसन्द करें। व्यक्ति सदा यही चाहता है।

ब्रह्मचर्यमय जीवन गार्हस्थ्य जीवन से सौ गुना अधिक अच्छा है। मैं ब्रह्मचर्य में विश्वास करता हूँ; क्योंकि यह मनुष्य में गुप्त शक्तियों का उद्घाटन करता है। ब्रह्मचर्य भगवद्-साक्षात्कार का सीधा राज-पथ है; विवाह सर्पगतिक मार्ग है। पूर्वोक्त अवरोक्त की अपेक्षा अधिक अधिमान्य है; किन्तु व्यक्ति अपनी निम्न काम-वासना के कारण अवरोक्त मार्ग ही अपनाता है।

तथापि गृहस्थ भी आत्म-साक्षात्कार से मात्र इसलिए वंचित नहीं होता कि उसके कन्धों पर परिवार का भार है। सन्त तुकाराम का दो बार विवाह हुआ। उनके बच्चे भी थे। तथापि वे विमान से वैकुण्ठ पहुँच गये। यदि आपका सांसारिक जीवन के प्रति दृष्टिकोण सरल, सच्चा तथा निष्कपट है, यदि आपकी तथाकथित जीवनसंगिनी धर्मनिष्ठ है तथा सभी विषयों में आपकी आज्ञाकारी है, तो विवाह करने में कोई हानि नहीं है। किन्तु यदि विवाहित जीवन व्यक्ति के लिए भार अथवा अभिशाप बनने की अधिक सम्भावना हो, तो व्यक्ति विवाह ही क्यों करे तथा ऐसी बेड़ी में अपने को क्यों उलझाये, जिसे कभी दो टुकड़ों में काटा नहीं जा सकता है?

यदि आप अति-नियम-निष्ठ ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहते हैं, तो विवाह न करें। अपने को यह कह कर प्रवंचित न होने देंह्नह्न''विवाह के पश्चात् मैं अति-नियम-निष्ठ ब्रह्मचर्य-व्रत का पालन करूँगा।'' बाद में यह इस ब्रह्मचर्य-व्रत के त्याग करने का अपना तर्क आपके सम्मुख प्रस्तुत करेगा। आपका धर्म है भगवद्-साक्षात्कार।

आपकी पूर्ववर्ती सभी विविध पशु-योनियों में

इन्द्रियों तथा यौन का पर्याप्त तुष्टिकरण हुआ है। पशु-जीवन यौन तथा जिह्वा की निम्न अभिरुचियों की तृप्ति के लिए है; किन्तु मानव-जीवन महत्तर उद्देश्यों के लिए है। हे मानव! आप काठ-कोयले का काम लेने के लिए चन्दन-वृक्ष को क्यों जलाते हैं? यह मानव-जीवन बहुमूल्य है। देवता भी इससे ईर्ष्या करते हैं। एक जीवन को गँवा देने का अर्थ है—भगवान् बनने के एक स्वर्णिम अवसर को गँवा देना।

विषय-सुख तृष्णा बढ़ाने वाला है। व्यक्ति जब तक अभिप्सित पदार्थ पर अधिकार प्राप्त नहीं कर लेता, तभी तक सम्मोहन रहता है। पदार्थ पर अधिकार प्राप्त कर लेने के पश्चात् उसे पता चलता है कि वह उसमें उलझ गया है। कुँवारा व्यक्ति प्रतिदिन विवाह के विषय में सोचता रहता है; किन्तु उपभोग उसको सन्तोष प्रदान नहीं करता है और न कर ही सकता है। इसके विपरीत यह केवल उसकी वासना को बदतर तथा तीव्र करता है और काम-वासना तथा लालसा के द्वारा उसके मन को और अशान्त बनाता है। उसको ऐसा अनुभव होता है कि वह कारावास में है। यह माया का इन्द्रजाल है। यह संसार प्रलोभनों से भरा है।

आप सांसारिक पदार्थों में आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते हैं। यह केवल भौतिकवादी विष है। इसके अतिरिक्त विवाह एक अभिशाप तथा आजीवन कारावास है। यह इस भूतल पर सबसे बड़ा बन्धन है। उस कुँवारे व्यक्ति को जो एक समय स्वतन्त्र था, अब जुआ लगा दिया गया है और उसके हाथों तथा पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गयी हैं। ऐसा निरपवाद रूप से सभी विवाहित व्यक्तियों का अनुभव है। अतः यदि आप टाल सकते हैं, तो विवाह न करें। विवाह के पश्चात् बचाव कठिन होगा। आध्यात्मिक मार्ग के जीवन की महिमा तथा विवाहित जीवन की महान् कठिनाइयों, चिन्ताओं, परेशानियों तथा झंझटों को अनुभव कीजिए। तीव्र वैराग्य का विकास कीजिए। भगवद्-चेतना के अपने जन्म-सिद्ध अधिकार का दावा कीजिए। क्या आप वास्तव में स्वयं ब्रह्म नहीं हैं?

पत्नी पति के जीवन को काटने की तीव्र छुरी है। यदि स्वर्ण-कण्ठहार तथा रेशम की बनारसी साड़ियाँ नहीं उपलब्ध की जातीं, तो पत्नी पति पर भौंहें चढ़ाती है। पति ठीक समय पर अपना भोजन नहीं पा सकता है। पत्नी तीव्र उदर-शूल से पीड़ित होने का झूठा बहाना बना कर बिस्तर पर लेट जाती है। आप यह तमाशा अपने घर में देख सकते हैं और प्रतिदिन अनुभव कर सकते हैं। निश्चय ही मुझे आपसे अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। अतः शान्ति के साथ विवाह कीजिए तथा वैराग्य नामक योग्य पुत्र और विवेक नाम की उदारचेता पुत्री प्राप्त कीजिए तथा आत्मज्ञान-रूपी सुस्वादु फल का आस्वादन कीजिए जो आपको अमर बना सकता है।

पत्नी एक विलासिता की वस्तु है। यह आत्यन्तिक आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक गृहस्थ विवाह के पश्चात् रो रहा है। वह कहता है—"मेरा पुत्र आन्त्र ज्वर (टाइफाइड) से रुग्ण है। मुझे अपनी दूसरी पुत्री का विवाह करना है। मुझे ऋण चुकाना है। मेरी पत्नी एक स्वर्ण-हार खरीदने के लिए परेशान कर रही है। मेरे ज्येष्ठ जामाता की अभी हाल में मृत्यु हो गयी।"

(अनूदित)

अपने तादात्म्य का दूसरों तक विस्तार करें!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

हम निरन्तर इस जागरूकता सहित जियें कि हमारा शरीर भगवान् का एक चलता-फिरता मन्दिर है। हम अपने शरीर को 'मेरा शरीर' करके जानते हैं। हम भूल जाते हैं कि इस पर भगवान् का भी उतना ही अधिकार है कि वह कहें कि 'यह मेरा मन्दिर है'। और जिसे हम अपना कहते हैं, वह सम्भवतया हमसे अधिक उनका है। यह सोच लेना कितना सरल है कि यह शरीर हमारा है! यह सोचते रहना कि यह उनका है, कितना कठिन है!

सरल क्या है और कठिन क्या है? किसी भी वस्तु की आसानी कठिनाई कैसे बन जाती है ? यदि हम इस बिन्दु पर चिन्तन करें, तो कई मनोरंजक तत्त्व उभर कर सामने आते हैं। अपने-आपके सम्बन्ध में सोचना बहुत ही सरल है। वास्तव में हम स्वयं को कभी भूलते ही नहीं। अपनी आवश्यकताओं, अपने कार्यक्रमों, अपने लक्ष्यों, अपने कपड़े और अपने भोजन इत्यादि सम्बन्धी पल-पल की विशद जानकारी होना कितना सरल है। यह कितनी सरलता और सहजता से हो जाता है। यह अत्यन्त स्वाभाविक प्रतीत होता है। किन्तु दूसरों के सम्बन्ध में, दूसरों की आवश्यकताओं, उनकी प्रसन्नता के सम्बन्ध में सोचना बहुत कठिन है।

ऐसा क्यों है कि हमें दूसरों के लिए सोचने में परिश्रम करना पड़ता है, जब कि अपने लिए हम इतनी सरलता से सोच लेते हैं? सम्भवतया यह इसलिए होता है कि जिसके साथ हमारा पूर्णतया एकात्म-भाव है, उसके सम्बन्ध में चिन्तन करने के लिए प्रयत्न नहीं करना पड़ता। इसलिए अपने शरीर के तथा उसकी आवश्यकताओं, आराम, सुविधाओं आदि के विषय में, उसकी प्रतिपल होने वाली माँगों के विषय में सोचना स्वाभाविक और सरल होता है। यह स्वयं ही मन में आ जाती हैं, बल्कि सदा मन में उपस्थित रहती ही हैं। कई बार तो इन्हें मन से निकाल कर और कुछ सोचना भी कठिन हो जाता है। एक बार हम यह जान लें, तो यह देखना बहुत सरल हो जाता है कि दूसरे के लिए सोचना कठिन क्यों प्रतीत होता है। यह इसलिए, क्योंकि दूसरों के जीवन और उनकी आवश्यकताओं के साथ हमारा तादात्म्य नहीं होता। जहाँ तादात्म्य है, वहाँ चिन्तन सरल, सहज और स्वत: हो जाता है। जहाँ तादात्म्य का अभाव है, वहाँ यह होना अत्यन्त कठिन है।

अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रास के लोग समस्त जगत् के लोगों के सम्बन्ध में सोचते हैं। जैसे ही कोई घोर विपत्ति आती है, कहीं लोग कष्ट में होते हैं, रेडक्रास तत्काल उनकी चिन्ता करता है और सहायता पहुँचाता है। कैसा चमत्कार है! कितना कठिन प्रतीत होता है ऐसा हो पाना! वह दूसरों के लिए सोचने को सदा सचेत और तत्पर रहते हैं। इसके लिए उन्हें कुछ भी अधिक प्रयत्न नहीं करना पड़ता; क्योंकि उन्होंने इसे अपना आधारभूत लक्ष्य, अपना उद्देश्य बना लिया

है। उनके अस्तित्व का मूल अर्थ ही अन्य लोगों के लिए सोचना और उनकी तत्क्षण सहायता करना है। उन्होंने स्वयं की दूसरों से तादात्म्य स्थापित करने की क्षमता विकसित कर ली है। उन्होंने यह भावना अपने स्वभाव में अर्जित कर ली है कि दूसरों की विपत्ति हमारी विपत्ति है, दूसरों का कष्ट हमारा कष्ट है, हमारा भी इसमें भाग है।

सम्भवतया रेडक्रास ने जीवात्मा की इस संसार में अत्यधिक समस्या को सुलझा दिया है। किन्तु ऐसा उन्होंने दार्शनिक या तत्त्वमीमांसक होने के नाते नहीं, प्रत्युत मानवता के नाते किया है। सम्भवतया वेदान्तीय उद्घोषणा, कि हमें अज्ञान की निद्रा से जागना चाहिए तथा अपने इस तुच्छ, संकुचित, बद्ध, सीमित, क्षणिक और असत्य व्यक्तित्वह्नजो कि हमारा वास्तविक स्वरूप नहीं है, को त्याग देना चाहिए।

अपने वेदान्त का प्रारम्भ, अपने मोक्ष का प्रारम्भ पहले मानवता के स्तर से करें; पहले दयालु और करुणामय हो कर करें। अपने एकात्म-भाव तथा मोह को विस्तृत, उच्चतर और विशद करें। इस प्रकार अपने इस 'मैं और मेरे' के चिन्तन के बन्धन तोड़ने का प्रथम पग हैह्नस्वयं को दूसरों के लिए सोचना सिखाना, दूसरों के लिए अनुभव करना, दूसरों के सहायतार्थ कुछ करने में संलग्न होने का प्रयत्न करना।

ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह एक अन्तरिम काल है। यदि आप किसी-न-किसी प्रकार से जीवात्मा की तात्कालिक समस्या को दूर करना चाहते हैं और यदि आप अपने-आपके विचार से एकदम ही परमात्मा के विचार तक बढ़ जाने में कठिनाई अनुभव करते हैं, तब इसे सरल बनाने के लिए पहले अपने-आपके लिए चिन्तन करने से हट कर अपने से एकदम निकट कीह्नइस संसार की, अन्य लोगों की, अन्य प्राणियों और पेड़-पौधों कीह्नचिन्ता करने का प्रयास करें।

यह उतना अधिक कठिन है, क्योंकि इन्हें हम जानते हैं। यह हमारे सामने दिखायी देते हैं और निकट हैं। इस प्रकार कदम आगे बढ़ायें। यदि यह आपको तत्काल ही भगवान् तक ले कर नहीं भी जायेगा, तो भी कम-से-कम आपको अपने-आपसे बाहर ले जाने में, स्वयं आपके अपने कारागार से बाहर ले जाने में सहायक होगा। यह छोटी सफलता नहीं है। यह अपने-आपमें एक महत्त्वपूर्ण पग है।

यदि आपको अपने-आपसे भगवान् या ब्रह्म तक एकदम ही चले जाने का कोई रास्ता नहीं मिल रहा, तब अपने समीपवर्ती पड़ोसी से प्रेम करें, जब और जहाँ, जो कोई भी आपके निकट हो, उससे प्रेमपूर्ण सम्बन्ध रखेंह्नभले ही वह उस समय आपसे एकदम अपरिचित ही हो। जिस समय जो भी समीपवर्ती हो, उससे प्रेमपूर्वक व्यवहार करें। यदि आप सहायतापूर्ण हाथ बढ़ा देते हैं, सम्भवतया वहाँ तक आप एक बड़ी विजय प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि तब आप अपने इस अस्थि-मांस के संकुचित 'मैं और मेरे' के पिंजरे को विस्मृत कर देते हैं। आपकी मुक्ति की प्रक्रिया में यह एक अंक की वृद्धि कर देता है और यदि आप अपने जीवन के खेल में इस प्रकार अंकों की वृद्धि करते रहें, तो आपका जीवन आपको मोक्ष दिलाने की सतत प्रक्रिया बन जायेगा, 'मैं और मेरे' के बन्धन की विशद समस्या पर सतत विजय पाने की प्रक्रिया बन जायेगा।

सम्भवतया इसीलिए उन्होंने कहा हैह्वह्व''भले बनो, भला करो। दया करो, दयालु बनो तथा **परोपकारार्थमिदं शरीरम्** (यह देह दूसरों की सेवा करने के लिए है)।'' यह जानते हुए कि परमात्मा के साथ एकीकरण में प्रवेश पा सकने से पूर्व व्यक्ति को स्वयं अपने-आपसे बाहर आ सकने के लिए इस अन्तरिम कदम की आवश्यकता है, उन्होंने मानवता के सम्मुख यह नैतिक आयाम प्रस्तुत किया, आदर्शवाद का आयाम; धर्म का, परोपकार का, दया और सेवा का आयाम कि 'मैं नहीं, अपितु अन्य सब' का आयाम प्रस्तुत किया। मानव-समाज और मानव-इतिहास के विकास को समझने का कितना रोचक ढंग है और व्यक्ति की विकास-प्रक्रिया का कैसे यह एक अंग बन गया है।

इसलिए आप यदि कठिन प्रतीत होने वाली इस बात को सरल बनाना चाहते हैं, तो इसके साथ तादात्म्य स्थापित करना आरम्भ कर दें, ऐसा सोचने के साथ कि 'यह मेरा भी उतना ही है जितना किसी अन्य का'। इसी प्रकार यदि आप समझने लगेंगे कि भगवान् मेरे हैं, तो उनके विषय में चिन्तन करना सरल हो जायेगा; उन्हें स्मरण करना, बिना भूले याद करना सहज हो जायेगाह्वह्वउससे कहीं अधिक सरल हो जायेगा जितना कि आप उन्हें 'कहीं और' होने की भावना के साथ स्मरण करते हैं।

अत: मेरेपन की भावना, तादात्म्य की भावना, जो कि हमारी आध्यात्मिक समस्या है, यही भावना वास्तव में आध्यात्मिक हल के रहस्य को लिये हुए है। गुरुदेव ने कहा हैह्वह्व''धर्म मोक्ष का द्वार है। परोपकार सबसे बड़ी साधना है, आनन्द-प्राप्ति का रहस्य है। नैतिक परिपूर्णता के अभाव में आत्म-साक्षात्कार असम्भव है।'' आप पर यह रहस्य प्रकटित हो। कठिन को सरल बनाने का यह चमत्कारी ढंग, आपको कठिनाई में डाल देने वाली प्रत्येक समस्या से मुक्त करने का यह चमत्कारी रहस्य आप पर प्रकट हो!

(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)

साधना क्या है?

साधना के द्वारा आत्म-साक्षात्कार होता है। अब प्रश्न उठता है कि साधना है क्या वस्तु? साधना का अर्थ हैह्वह्वसम्यक् जीवन, ईश्वरोन्मुखी जीवन-यापन, ऐसा जीवन-यापन जिसमें अपने सत्स्वरूप को अभिव्यक्त तथा प्रव्यक्त करना आरम्भ किया जाता है। आप नित्य, शुद्ध तथा निरंजन हैं। आप अपने दैनिक जीवन में अपने इसी नित्य, शुद्ध तथा निष्कल्मष स्वभाव को अपने विचार तथा वाणी में, अपनी कामनाओं की प्रतिकृति में तथा अपने आन्तरिक उद्देश्य में प्रव्यक्त करें। इसका अभ्यास करें। इसको अपने जीवन में चरितार्थ करें। इसे विकीर्ण करें। यही साधना है।

स्वामी चिदानन्द

इतिहास एवं पुराण ४

परम पावन श्री स्वामी कृष्णानन्द जी महाराज

इतिहास और तत्त्वमीमांसा

यह धारणा गलत है कि अ-ऐतिहासिकता का अर्थ अस्तित्व का न होना है। इतिहास के प्रति गलत दृष्टिकोण रखने के कारण ही इस गलत धारणा को प्रश्रय मिला है। घटनाओं या पदार्थों का सामाजिक जीवन के सन्दर्भ में ऐतिहासिक या वैयक्तिक महत्त्व है, इस बात को स्वीकार करने के साथ-साथ उन पर एक विश्वव्यापी सन्दर्भ में भी विचार किया जा सकता है।

मानव-मन की आदत है कि वह अनुक्रम में घटित एक के बाद दूसरी घटनाओं पर ही विचार करता है और घटनाओं की इस रेखीय गति को ही इतिहास मान लेता है। इसको हम मन की त्रिविमात्मक परिप्रेक्ष्य कह सकते हैं। दूसरे शब्दों में हम घटनाओं या वस्तुओं को उनके प्रतिरूपों से असम्बद्ध करके एक स्वतन्त्र इकाई के रूप में देखते हैं और उनके बीच के आन्तरिक, स्वभावगत या मूलभूत सम्बन्धों (कड़ियों) पर ध्यान नहीं देते। यही शास्त्रीय ऐतिहासिक दृष्टि है। राजनैतिक इतिहास की घटनाओं में परस्पर कोई स्वभावगत सम्बन्ध नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि दिक्काल में घटनाएँ अचानक ही घटित हो जाती हैं और उनके बारे में पहले से कुछ कह सकना कठिन है। लेकिन इतिहास के दार्शनिकों को मालूम है कि यह तथ्य इतिहास का सत्य नहीं है। इतिहास घटनाओं के कारण-कार्य-सम्बन्ध को महत्त्व देता है, जब कि यह सम्बन्ध ब्रह्माण्ड का मात्र आंशिक सत्य है।

आर्थर एडिंगटन के अनुसार कारण-कार्य-सम्बन्ध तथा कारणत्व में अन्तर है। उसके अनुसार कार्य-कारण-सम्बन्ध का अर्थ है कि कारण कार्य का कालिक पूर्ववर्ती होता है। कारणत्व से उसका तात्पर्य यह है कि ब्रह्माण्ड में घटनाएँ परस्पर असम्बद्ध नहीं हैं। ह्वाइटहेड भी कहता है कि सत्य एक संघटिक प्रक्रिया की तरह होता है। यहाँ इतिहास की त्रिविमात्मक दृष्टि एक विश्वजनीन स्थिति के सत्य के आगे घुटने टेक देती है। यद्यपि वैयक्तिकता-प्रधान दृष्टिकोण से यह बात मानसेतर लगेगी, परन्तु यह स्वयं चिन्तकों के मूलभूत स्वभाव में ही निहित है; अतः इस ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। किसी बिन्दु पर मनन करना आवश्यक हैह्वइसका अर्थ यह नहीं है कि यह आवश्यकता हर स्थिति में एक अखण्डनीय सत्य है।

जेम्स जीन के अनुसारह्व''हम यह नहीं कह सकते कि भूतकाल की घटनाओं से ही वर्तमान का निर्माण होता है। भूत और वर्तमान के वस्तुगत अर्थ नहीं हुआ करते, क्योंकि चार आयामों वाले चतुर्विमात्मक सान्तत्यक को भूत, वर्तमान और भविष्य में ठीक-ठीक विभाजित नहीं किया जा सकता। यदि हम यह मानना चाहते हैं कि प्रातिभासिक जगत् की घटनाएँ कारण-कार्य-सम्बन्ध

के नियम से संचालित होती हैं, तो हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि ये घटनाएँ उस विश्व के किसी अधःस्तर पर निर्धारित की जाती हैं जो इस प्रातिभासिक जगत् की सीमाओं से परे है।''

ब्रह्माण्ड एक संयुक्त (सम्बद्ध) प्रक्रिया है। यह अन्तरिक्ष में लटके हुए पृथक्-पृथक् पदार्थों का समूह नहीं है। किसी विशेष घटना या पदार्थ को किसी दूसरी विशेष घटना या पदार्थ का कारण नहीं माना जा सकता। ब्रह्माण्ड की अखण्ड प्रक्रिया में प्रत्येक भाग दूसरे भाग में व्याप्त है; अतः प्रत्येक वस्तु कारण और कार्य दोनों ही है। प्रत्येक घटना एक विश्व-व्यापी स्थिति का प्रतिबिम्ब है तथा सम्पूर्ण इकाई से पृथक् किया हुआ कोई भाग नहीं है। घटनाओं के अविभाज्य चैतन्य (जो पदार्थों की सत्ता और अन्तर्वस्तु है तथा जो उनका साक्षी भी है) के निष्कर्षों पर जब हम वैयक्तिक दृष्टिकोण से विचार करते हैं, तभी घटनाओं के कारण-कार्य-सम्बन्धों की प्रतीति होती है। अटूट सान्तत्यक के रूप में इस विश्व-व्यापक सिद्धान्त का कार्य (जब यह व्यक्तियों में अव्यक्त होता है) कारण-कार्य-सम्बन्ध के नियम के रूप में दिखलायी पड़ता है। इस पदार्थमय जगत् में परम तत्त्व की आत्माभिव्यक्ति के कारण पदार्थों में एक जीवन्त सम्बन्ध दीखता है जो कारण-कार्य-सम्बन्ध के रूप में प्रकट होता प्रतीत होता है। अनुभवजन्य जगत् में तो कारण-कार्य-सम्बन्ध का कोई अर्थ है, परन्तु परम तत्त्व के लिए यह सम्बन्ध अर्थहीन है। हमारी यन्त्रवादी इन्द्रियाँ ब्रह्माण्ड के इस अप्रकट उद्देश्य को नहीं समझ सकतीं, यद्यपि इसी लक्ष्य की ओर ही (इस उद्देश्य को समझने हेतु) क्रम-विकास की समस्त प्रक्रियाएँ गतिशील हैं।

योगवासिष्ठ में वर्णित लीला और पद्मा की कथा से इस सत्य का पता चलता है कि एक ही घटना कई तिथियों में, कई स्थानों पर घटित हो सकती है। प्रत्येक घटना एक विश्व-व्यापक घटना है और सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के लिए वह युक्ति-युक्त है। भूत, वर्तमान तथा भविष्य का निरपेक्ष रूप से निर्धारण नहीं किया जा सकता (अर्थात् उनकी सर्वस्थानों और समस्त काल-खण्डों में अपरिवर्तनीय रहने वाली निश्चित सीमा-रेखाएँ नहीं होतीं)। एक ही घटना के विभिन्न दिक्कालों में नितान्त भिन्न सन्दर्भों में विभिन्न अर्थ या महत्त्व हो सकते हैं। एक के लिए जो भूत है, दूसरे के लिए भी वह भूत हो, यह आवश्यक नहीं है। यही बात वर्तमान और भविष्य पर भी लागू होती है। किसी भी निश्चित समय में घटित होने वाली कोई स्वतन्त्र घटना भूत, वर्तमान या भविष्य की किस श्रेणी के अन्तर्गत है, इसका निर्धारण इस बात से होगा कि किस दिक्काल के सन्दर्भ में उस पर विचार किया जा रहा है। **(अनूदित)**

सत्य-पालन की प्रतिज्ञा द्वारा वाणी की शुचिता बनाये रखने का गुण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। सत्यशीलता जैसे महान् गुण की गरिमा अवर्णनीय है। यहाँ इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि यदि साधक में सत्यशीलता नहीं है, तो उसका सम्पूर्ण आध्यात्मिक जीवन ही निरर्थक है, शून्य है। जब तक व्यक्ति यथाशक्ति प्राणपन से सत्य पर सर्वथा स्थिर रहने का प्रयास नहीं करता, तब तक उसमें रंचमात्र भी वास्तविक, सारभूत तथा स्थायी आध्यात्मिक प्रगति नहीं हो सकती। **स्वामी चिदानन्द**

बच्चों के लिए दिव्य जीवन :

नीति-कथाएँ २

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

उर्मिला और उमा

गोपीचन्द की दो लड़कियाँ थीं, जिनका नाम था उर्मिला और उमा। वह उन्हें बहुत चाहता था। उसने उर्मिला का विवाह एक माली से किया और उमा का एक कुम्हार से। एक दिन गोपीचन्द उर्मिला के घर गया और बोलाह्न''बेटी! कैसी हो?'' उर्मिला ने जवाब दियाह्न''हम बहुत सुखी हैं। भगवान् से प्रार्थना करो कि हमारे पौधों को खूब पानी मिले।''

तब गोपीचन्द उमा के घर गया और पूछाह्न''उमा बेटी! तुम कैसी हो?'' उसने कहाह्न''हम बहुत सुखी हैं। भगवान् से प्रार्थना करो कि कुछ दिन और वर्षा न हो, जिससे कि हमारे कच्चे घड़े सूख जायें।''

गोपीचन्द बहुत उलझन में पड़ गया। वह यह निश्चय नहीं कर पा रहा था कि क्या प्रार्थना करे। तब उसने गम्भीरता से विचार किया। उसकी समझ में आ गया कि संसार में प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थी है।

बुद्ध का विवेक

एक बार एक गरीब स्त्री का बच्चा मर गया। वह भगवान् बुद्ध के पास गयी और उसने अपने मरे हुए बच्चे को जीवित करने वाली औषध माँगी। बुद्ध ने कहाह्न''बहन! सिर्फ एक दवा है जो तुम्हारे बच्चे को जिला सकती है। तुम मुझे मुट्ठी-भर सरसों किसी ऐसे घर से ला दो, जिसमें आज तक कोई मरा न हो।''

वह स्त्री घर-घर जा कर सरसों माँगने लगी। सभी घरों से उसे एक ही उत्तर मिलता। एक ने कहाह्न''मेरा बच्चा मर गया है।'' दूसरा बोलाह्न''कल मेरे पिता मरे हैं।'' तीसरा बोलाह्न''महीने-भर पहले मेरी पत्नी मरी है।''

दु:खी हो कर वह बुद्ध के पास लौट आयी और उनसे सारा हाल कह सुनाया। तब बुद्ध भगवान् ने कहाह्न''तुम अपने ही दु:ख की बात मत सोचो। दु:ख और मृत्यु का सामना सभी को करना पड़ता है।''

चींटी और टिड्डा

दो पड़ोसी थेह्नएक चींटी और एक टिड्डा। चींटी बड़ी फुरतीली थी। खूब मेहनती थी। वह हमेशा जाड़ों के लिए अनाज-दाने जमा करने में लगी रहती थी।

टिड्डा बड़ा आलसी था। सारी गरमी उसने गाने में ही बिता दी। जाड़े का मौसम आ गया। उसके पास खाने को कुछ न था। एक दिन वह पड़ोसी चींटी के पास गया और खाना माँगने लगा। चींटी ने पूछाह्न''दोस्त! गरमी के दिनों में क्या करते रहे?'' टिड्डे ने कहाह्न''गाता रहा।'' चींटी ने कहाह्न''अब जाड़ा नाचने में बिताओ। मैं क्या करूँ? तुम्हें देने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है।''

टिड्डा बेचारा मुँह लटका कर घर लौटा। उसे सारा जाड़ा भूखे रह कर गुजारना पड़ा।

सीख : कभी आलस्य न करो। सदा फुरतीले बने रहो। कोई-न-कोई काम करते रहो। हमेशा भविष्य के लिए बचाते रहो। कभी भीख या उधार न माँगो।

(अनुवादक : श्री त्रि. न. आत्रेय)

बाल-स्तम्भ :

एक-दूसरे से बढ़ कर ४

स्वामी रामराज्यम्

(उत्तराखण्ड के एक गाँव में बनी भाई-बहन की दो समाधियों की कहानी सुनाते हुए उसी गाँव के निवासी रामप्रसाद ने बताया कि बदरीनाथ से लौटती हुई एक बस दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। बस के एक यात्री राजू ने उस दुर्घटना में अपनी पत्नी को तो खो दिया लेकिन तेरह-चौदह वर्ष की एक अपरिचित बालिका लक्ष्मी को बचा लिया। राजू लक्ष्मी के गाँव में उसके साथ उसका भाई बन कर रहने लगा। उस गाँव में हुए एक अग्निकाण्ड में एक बूढ़े व्यक्ति को बचाने के विफल प्रयास में लक्ष्मी मर गयी। राजू ने लक्ष्मी की स्मृति में एक समाधि बनवायी। एक दिन राजू ने रामप्रसाद को लक्ष्मी के परदादा और परदादी की अपूर्व उदारता की कहानी सुनायी। राजू ने यह भी कहा कि सतरह-अठारह वर्ष की आयु में ही किसी दूसरे के लिए अपने प्राण दे देने वाली लक्ष्मी की असाधारणता का कारण उसके महान् पुरखों का खून ही था जो उसकी नसों में बह रहा था। कुछ दिनों बाद पीपलकोटी में बाढ़ आ गयी। राजू ने वहाँ जा कर बाढ़-पीड़ितों की तन-मन-धन से सेवा की।)

इस घटना के कुछ दिनों बाद देश पर युद्ध के बादल मँडराने लगे। फौज में सैनिकों की भरती होने लगी। एक दिन राजू कहने लगा, 'दादा, मेरा मन यहाँ नहीं लग रहा है। मेजर से कह कर फौज में मेरी भरती करवा दो। मेजर का मकान इसी गाँव में है। उन दिनों वह छुट्टी पर गाँव आये हुए थे। मैंने उनसे राजू के बारे में बात की। वह राजी हो गये। छुट्टी खत्म होने पर जब वह वापस जाने लगे, तब उसे अपने साथ लिवा ले गये। कुछ दिनों बाद राजू ने मुझे दिल्ली से एक पत्र डाला। उसमें लिखा था, 'मेरी भरती हो गयी है। कभी भी ड्यूटी पर जाने का आर्डर मिल सकता है। मैं गाँव नहीं आ पाऊँगा। लक्ष्मी की समाधि पर रोज दीया जला दिया करना। मेरे घर पर निगाह रखना। वहाँ लक्ष्मी का बहुत सारा सामान पड़ा हुआ है। वहाँ मैंने वह राखी भी बहुत सँभाल कर रख छोड़ी है, जिसे वह मेरे हाथ में बाँध नहीं पायी थी। दादा, मुझे आशीर्वाद दो, और देते रहना।' इसके बाद राजू का कोई समाचार नहीं मिला। एक दिन रेडियो से सुना कि युद्ध छिड़ गया। कई दिनों बाद राजू का एक दूसरा पत्र आया। उसमें लिखा था, 'लेह से आगे सत्रह हजार फुट की ऊँचाई पर ग्लेशियरों से घिरे हुए इलाके से यह चिट्ठी भेज रहा हूँ। यहाँ बेहद ठण्ढक है। चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ है। मुझे लक्ष्मी की यह बात याद आ रही है कि अपना और दूसरों का एक ही परिवार होता है। हाँ, सचमुच। सारे देशवासी मुझे अपने ही परिवार-कुटुम्ब के लगते हैं। दूसरों के लिए कुछ-न-कुछ करते रहने के जोश की जो गरमी लक्ष्मी की बातों ने मुझमें भर दी है, उसके सहारे यहाँ की ठण्ढक को सहन कर रहा हूँ।' थोड़े दिनों बाद रेडियो से यह समाचार सुनने को मिला कि लेह से आगे शत्रुओं से लड़ती हुई भारतीय फौज की एक टुकड़ी बर्फ के तूफान में दब गयी। मेरा जी धक हो गया। इसके बाद युद्ध के दूसरे समाचार तो मिलते रहे, लेकिन राजू की टुकड़ी का कोई समाचार नहीं मिला।

एक दिन मेजर...।'' कहते-कहते रामप्रसाद सिसकने लगा। फिर आँसू पोंछते हुए कहने लगाह्न ''एक दिन मेजर फौज की गाड़ी में राजू का शरीर ले कर आ गये। उनके साथ कुछ और फौजी अफसर भी थे। उन लोगों ने राजू के शरीर पर फूल चढ़ाये। फिर मेजर ने गाँववालों को राजू के बारे में बताया । बड़ी मर्मभेदी बातें थीं। जहाँ राजू की ड्यूटी लगी थी, वहाँ बर्फ का तूफान आने के कारण कई फुट ऊँची बर्फ जम गयी थी। कुछ महीनों बाद बर्फ पिघली। तब भारतीय फौज के अफसर कुछ सैनिकों के साथ उस स्थान पर पहुँचे। वहाँ राजू की पूरी कम्पनी बर्फ में दब गयी थी। मरे हुए सैनिकों के शरीर बर्फ की ठण्ढक के कारण नष्ट नहीं हुए थे। मोरचे पर राइफिलें सँभाले हुए सैनिकों के शरीर ऐसे दिखलायी पड़ रहे थे, मानो उनमें प्राण हों। ऐसा प्रतीत होता था कि वे आँखें फाड़े हुए शत्रुओं के आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। बर्फ में जम गये राजू के दोनों बाजुओं पर एक सैनिक का शरीर था, जिसका एक पैर टूट कर लटक गया था। दोनों के शरीर एक मोर्टार के सहारे टिके हुए थे। राइफिलें और मशीनगनें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं।'' इतना कह कर रामप्रसाद थोड़ी देर के लिए रुका, फिर कहने लगाह्न ''मेजर और सेना के वे अफसर वापस लौट गये। पूरे गाँव में सन्नाटा छाया हुआ था। उस दिन कई घरों में खाना नहीं बना। अपर्णा देवी के मन्दिर में पुजारियों ने राजू के लिए विशेष पूजा की। फिर गाँववालों ने राजू की भी समाधि लक्ष्मी की समाधि के पास बनवा दी। मैं रोज शाम को उन समाधियों पर दीया जलाने जाता हूँ। वहाँ जा कर मन बहुत उदास हो जाता है। मुझे तो ऐसा लगता है कि राजू और लक्ष्मी-जैसे लोगों के रूपों में देवता या ऋषि-मुनि ही इस धरती को पवित्र करने के लिए आते होंगे। मेरी बात ठीक है न?''

मैंने रामप्रसाद की बात का कोई उत्तर नहीं दिया। केवल इतना कहाह्न ''सब लोग राजू और लक्ष्मी की तरह बन जायें, तो इस धरती पर स्वर्ग उतर आये। बहुत रात हो गयी है, अब तुम सो जाओ।''

रामप्रसाद सोने के लिए चला गया।

न मैंने राजू को कभी देखा था, और न लक्ष्मी को, लेकिन लेटा-लेटा उन दोनों के बारे में बहुत देर तक सोचता रहा।

दूसरे दिन सुबह मैं उन समाधियों के पास जा कर चुपचाप खड़ा हो गया। मन-ही-मन मैंने कहाह्न 'भगवान्! तुम्हारी इच्छा से तुम्हारी ये दोनों प्यारी-दुलारी सन्तानें इस धरती पर आयीं और तुम्हारी की इच्छा से सेवा का पाठ पढ़ा कर इस धरती से विदा हो गयीं।'

कुछ महीनों के बाद जब मैं फिर उस गाँव में रुका, तब मेरे पास संगमरमर का एक टुकड़ा था। उसे मैंने दोनों समाधियों के ऊपर बीचोबीच लगवा दिया। उस पर ये शब्द लिखे हुए थेह्न

एक-दूसरे से बढ़ कर □□□

हम साधना के हेतु ही इस पार्थिव जगत् में आये हैं। इस भूलोक में ही साधना की जा सकती है और इसीलिए यह लोक साधना-भूमि कहलाता है।

स्वामी चिदानन्द

प्रेम, करुणा और सहयोग की आवश्यकता

परम श्रद्धेय श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज

आधुनिक विज्ञान ने मानव-जाति के लिए आराम तथा सुविधा के अनेकानेक साधनों को प्रस्तुत किया है। दूरी पर विजय मिल चुकी है। मनुष्य समय के साथ दौड़ने में समर्थ बन चुका है। प्राकृतिक शक्ति मनुष्य के अधीन हो गयी है। वह अब कम प्रयास में ही अधिकाधिक आनन्द का उपभोग कर लेता है।

विज्ञान ने प्रचुरता तथा समृद्धि का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में फैक्टरियाँ बन रही हैं। उन्नत वैज्ञानिक कृषि-साधनों ने अब अन्न के उत्पादन में भी पर्याप्त वृद्धि ला दी है। परन्तु आप कहीं भी जायें और पूछेंह्न ह्न''भाई, क्या आप शान्ति का अनुभव करते हैं? क्या आप सुखी हैं?'' आपको उत्तर मिलेगाह्न ह्न''मैं सुखी नहीं हूँ। नरम शय्या तथा सुविधा-सम्पन्न कमरा शान्तिमय निद्रा प्रदान नहीं करते। मेरे चतुर्दिक् भोग की वस्तुएँ भरी पड़ी हैं; परन्तु मेरे अन्तस्तल को भय, शोक और दुःख खाये जा रहे हैं। फिर, मैं उनके द्वारा सुख कैसे प्राप्त कर सकता हूँ?''

यह निर्धन मनुष्य की शिकायत नहीं हैं; धनी जन भी इस दुःख से ग्रस्त हैं। नेता भी ऐसा ही कहते हैं।

इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि सुख विषय-भोगों में नहीं है । मनुष्य विषयों को भोगने में तभी समर्थ होता है, जब वह अपने अन्तर से सुखी और शान्त हो जाता है। सुख तथा शान्ति की खोज विषयों में नहीं, उनसे अन्यत्र होनी चाहिए। वे (सुख-शान्ति) तो हृदय के अन्तस्तल में ही छिपे हुए हैं। यदि मनुष्य अपने हृदय के प्रकोष्ठों को दिव्य जीवन की कुंजी द्वारा खोले, तो वह उन्हें प्राप्त कर सकता है।

दिव्य जीवन नया धर्म नहीं है, न यह नया मत है। फिर भी आधुनिक जगत् के लिए यह एक प्रकार की नवीन वस्तु ही है। विविध विषय-कामनाओं से आच्छन्न हो कर यह दिव्य जीवन मनुष्य की चेतना से परे चला गया है। आधुनिक मानव अपने अन्दर स्थित इस खजाने से पूरी तरह अनभिज्ञ है।

दिव्य जीवन का खजाना प्रेम का खजाना है। विश्व-प्रेम दिव्य जीवन है। सभी प्राणियों के प्रति करुणा दिव्य जीवन है। सबसे प्रेम करने तथा सबकी सेवा करने की भावना रखना ही दिव्य जीवन है। ये सारे दिव्य गुण इस बोध पर आश्रित हैं कि सभी जीव दिव्य हैं। सभी जीवों के अधिष्ठान के रूप में एक ही परमात्मा है; इस साक्षात्कार को दैनिक जीवन में व्यक्त करना ही दिव्य जीवन है।

आजकल मानव के कार्य-व्यापारों में इसी दृष्टिकोण की कमी है। घर में, कार्यालय में तथा कचहरी में, फैक्टरी में तथा सम्मेलनों में, राष्ट्र संघ तथा विश्व संस्थाओं में इसी बात का अभाव है। सारे जीवन के अधिष्ठान इस परम सत्य का साक्षात्कार हो

जाने पर भय, विपत्ति, शोक आदि मनुष्य के हृदय से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। तब मानव सबके साथ प्रेम का व्यवहार करने लगेगा। वह सबके प्रति करुणा की भावना रखेगा। वह सन्मति तथा शुभेच्छा के साथ सारी मानव-जाति के साथ सम्मिलित रहेगा। वह स्वत: ही एकता तथा सहयोग के लिए प्रेरित होगा। वह अपनी वस्तु में दूसरों को भी प्रसन्नतापूर्वक भागीदार बनायेगा। कोई भी किसी के साथ अविश्वास न करेगा। कोई किसी से भय नहीं करेगा। कोई भी दूसरे से द्वेष नहीं करेगा। सभी प्रकार की विषमताएँ, अशान्ति, संघर्ष आदि का अन्त हो जायेगा। मनुष्य के हृदय में तथा समस्त जगत् में सुख तथा शान्ति का साम्राज्य छा जायेगा, तभी वैज्ञानिक आविष्कार तथा भौतिक प्रगति सार्थक सिद्ध होंगे।

अपने हृदय में ईश्वर को आसीन करें। इस सत्य में आस्था रखें कि ईश्वर समस्त विश्व में व्याप्त है। यह आस्था आपके अन्दर दिव्य जीवन के रूप में प्रस्फुटित होगी। सबकी सेवा करें। सबसे प्रेम करें। भय, शोक तथा घृणा को अपने हृदय से निकाल दें। उसको प्रेम तथा करुणा से भर लें। सबको सहयोग दें तथा सबके कल्याण के लिए कार्य करें। **(अनूदित)**

विश्व-प्रार्थना

हे स्नेह और करुणा के आराध्य देव!
तुम्हें नमस्कार है, नमस्कार है।
तुम सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ हो।
तुम सच्चिदानन्दघन हो।
तुम सबके अन्तर्वासी हो।

हमें उदारता, समदर्शिता और मन का समत्व प्रदान करो।
श्रद्धा, भक्ति और प्रज्ञा से कृतार्थ करो।
हमें आध्यात्मिक अन्त:शक्ति का वर दो,
जिससे हम वासनाओं का दमन कर मनोजय को प्राप्त हों।
हम अहंकार, काम, लोभ, घृणा, क्रोध और द्वेष से रहित हों।
हमारा हृदय दिव्य गुणों से परिपूरित करो।

हम सब नाम-रूपों में तुम्हारा दर्शन करें।
तुम्हारी अर्चना के ही रूप में इन नाम-रूपों की सेवा करें।
सदा तुम्हारा ही स्मरण करें।
सदा तुम्हारी ही महिमा का गान करें।
तुम्हारा ही कलिकल्मषहारी नाम हमारे अधर-पुट पर हो।
सदा हम तुममें ही निवास करें।

स्वामी शिवानन्द

कैसा जीवन आपको जीना है!

परम पावन श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज

एक ईसाई धर्मतत्त्वज्ञ और चर्च के प्रतिष्ठित व्यक्ति से जब यीशु के विषय में उनके व्यक्तिगत विचार पूछे गये, तो उन्होंने उत्तर दियाह्वह्व''कुछ लोग उन्हें यहूदियों में महान् सुधारक कहते हैं, कुछ उन्हें भगवान् का पुत्र कहते हैं, कुछ उन्हें अवतार मानते हैं; किन्तु मेरे लिए वह एक महान्, उदात्त महापुरुष थे जो आजीवन दूसरों की भलाई में संलग्न रहे। वह ऐसे व्यक्ति थे जो लोगों में केवल उनका भला करने के लिएह्वह्वउनका उपचार करने, उन्हें सुख पहुँचाने, धैर्य बँधाने, प्रेरणा देने और उन्हें ऊपर उठाने के लिए ही जीते थे।''

और कैसा आश्चर्य है कि यदि आप भगवान् श्री कृष्ण के अवतरित होने से ले कर लीला-संवरण तक सम्पूर्ण घटना-परिपूरित जीवन पर दृष्टि डालें, तो देखेंगे कि उन्होंने कभी भी विश्राम नहीं किया। निरन्तर कार्यरत, सदा लोगों के मध्य किसी-न-किसी काम में संलग्न रहे। शैशवावस्था से ले कर अन्तिम समय तक वह भला करने, लोगों की सहायता करने, गलत को ठीक करने, लोगों की खोयी हुई प्रसन्नता को वापस लौटाने तथा सदैव विभिन्न ढंगों से लोगों की सहायता करने में ही लगे रहे।

वह परोपकार की साकार प्रतिमा थे; भले बन कर सबका भला करते रहे। शोक-सन्तप्त लोगों की पुकार सुनते ही वह सहायता के लिए तत्काल उपस्थित हो जाते थे। उनके जीवन को देखने पर हम यही पाते हैं कि उनका जीवन एक त्यागपूर्ण जीवन था, जिसमें उन्होंने सदैव अन्य लोगों का ही हित-चिन्तन किया, अपने लिए कभी एक क्षण के लिए भी न सोच कर सदा दूसरे, दूसरे और दूसरे के लिए ही सोचा और आजीवन दूसरों को ही सुख प्रदान करते रहे। वह कृतज्ञता के चरण-चिह्न छोड़ गये। समस्त जगत्, धनी-निर्धनह्वह्वसभी उनके अवतरित होने से लाभान्वित हुए।

इस प्रकार वह एक देवपुरुष के रूप में ही नहीं, प्रत्युत एक उदात्त परोपकारी के रूप में प्रकट हुए। राम एक आदर्श व्यक्ति के रूप में तथा कृष्ण एक महान् परोपकारी के रूप में प्रकट हुए।

इसीलिए सम्भवतया हम कह सकते हैं कि मनुष्य होने के नाते व्यक्ति को जब सोचने की शक्ति प्राप्त है, अनुभव करने की, विचार करने की शक्ति मिली हुई है; क्या उचित है, क्या अनुचित है, क्या भला है, क्या बुरा है, यह जानने की शक्ति उपलब्ध है, फिर भी यदि कोई व्यक्ति इस प्राप्त-निधि का सदुपयोग नहीं करता और अपने ही लिए स्वार्थपरक जीवन जीता है, केवल अपने लिए ही सोचता है, तो उसका जीवन कोई जीवन नहीं है, वह तो मृत समान ही है। जब कि यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन को ध्यानपूर्वक जीने के साथ-साथ अथक रूप से दूसरों की भलाई में संलग्न है, दूसरों की प्रसन्नता को देखते हुए, उनकी सहायता करता है, उनके चतुर्दिक् के

जीवन के लिए भी लाभकारी है, ईश्वर की सम्पूर्ण सृष्टि के लिए उपयोगी है, तो ऐसे व्यक्ति का जीवन ही वास्तव में सच्चा जीवन है। यह जीवन स्वार्थी व्यक्ति के मृतप्राय: जीवन के समान न हो कर पूर्णतया जिया जाने वाला यथार्थ जीवन है।

और वह व्यक्तिह्वह्वजो केवल अन्य लोगों के भले के लिए, प्राणी-मात्र के भले के लिए ही न जीता हुआ भगवान् की ओर भी लगा हुआ है, भगवान् के लिए जीवन जीता है, उन्हीं के लिए श्वास लेता है, हर क्षण उन्हीं के ध्यान में भक्ति-पूरित हृदय से जीवन व्यतीत करता है, ऐसे व्यक्ति का जीवन, भली प्रकार जिया गया जीवन ही नहीं है, प्रत्युत ऐसे जीवन की मृत्यु नहीं है। ऐसा जीवन अमर जीवन है। शाश्वत जीवन, दिव्य जीवन, ईश्वर में निवास करने वाला जीवन है यह जिसमें आप जानते हैं कि आप भगवान् का ही अंश हैं।

अत: तब आप इस शरीर में रहते हुए भी मानव-जीवन नहीं जीते, सांसारिक जीवन नहीं जीते, प्रत्युत आप तो भगवान् के साथ एक हो कर शाश्वत जीवन जीते हैं। आप तब उन्हीं का अंश हो जाते हैं। आप 'वही' हो कर जीते हैं, दिव्यता से चमकते हुए, अपने मन, वाणी और कर्मों से दिव्यता अभिव्यक्त करते हुए अपने जीवन में, जीवन के प्रत्येक कार्य, प्रत्येक क्रिया में दिव्यता लाते हुए जीते हैं, तब आप!

ऐसा ही जीवन जीने की कामना करनी चाहिए। ऐसा ही जीवन होने की आकांक्षा वास्तव में होनी चाहिए। और ऐसा ही जीवन दिव्य जीवन है, उत्कृष्ट महान् जीवन है। यह शाश्वत, अमर जीवन है, यह धरा पर ईश्वरीय जीवन है।

श्रद्धेय गुरुदेव ने वास्तव में यही उज्ज्वल आदर्श आधुनिक मानवता के सम्मुख प्रस्तुत किया है; क्योंकि यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। आप ऐसा जीवन जीने के लिए ही बने हैं। दु:ख और मृत्युमय इस संसार में जब आप जन्म ले कर आये हैं, तो आपके दिव्य लक्ष्य की पूर्ति ऐसे जीवन से ही होगी। इस नश्वर शरीर में रहते हुए भी यह ऐसा जीवनह्वह्वएक शाश्वत जीवन है, अमर जीवन है, ईश्वरीय जीवन है। इसी के लिए प्रयत्नशील हों और धन्य हो जायें! **(अनुवादिका : श्रीमती सुधा भारद्वाज)**

दिव्य जीवन-सम्बन्धी उपदेशों का सारतत्त्व

केवल ईश्वर ही सत्य है। यह संसार एक सापेक्ष सत्य है। संसार ईश्वर पर पूर्णतः निर्भर है। मानव ईश्वर का ही प्रतिरूप है; परन्तु उसके अमर पद का उत्तराधिकारी बनने हेतु उसे (मानव को) अपने अन्दर के पशुत्व पर विजय प्राप्त करनी होगी। अपने निम्नस्तरीय स्वभाव पर विजय प्राप्त करने का प्रयास ही साधना कहलाता है। मानव-जीवन का एकमात्र परम लक्ष्य हैह्वह्वब्रह्म का साक्षात्कार तथा ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। यह है दिव्य जीवन-सम्बन्धी उपदेशों का सारतत्त्व।

स्वामी शिवानन्द

मुख्यालय आश्रम में विद्यार्थियों का तीन-दिवसीय आध्यात्मिक शिविर

सद्गुरुदेव के दिव्य मिशन द डिवाइन लाइफ सोसायटी के अमृत महोत्सव के पावन अवसर के एक अंग के रूप में मुख्यालय आश्रम में १ से ३ अक्तूबर तक विद्यार्थियों का तीन-दिवसीय आध्यात्मिक शिविर आयोजित किया गया। इसमें ऋषिकेश के १२ विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से ९२ विद्यार्थियों ने तथा उनके साथ १७ अध्यापकों ने भाग लिया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन स्वामी शिवानन्द सत्संग भवन (आडिटोरियम) में किया गया था।

१ अक्तूबर को कार्यक्रम का शुभारम्भ 'जय गणेश' प्रार्थना तथा उसके उपरान्त डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष एवं शिविर के अध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज के स्वागत-भाषण एवं आशीर्वचनों सहित हुआ। इसके साथ ही डी. एल. एस. मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने दीपक प्रज्वलित करते हुए शिविर का औपचारिक रूप से उद्घाटन किया।

शिविर के प्रत्येक दिवस में दो-दो सत्रों का समावेश किया गया था। श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज पूर्वाह्न सत्र के विधिनायक (मास्टर ऑफ सेरेमनीज) रहे तथा अपराह्न सत्र के विधिनायक के रूप में समारोह का संचालन प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने किया। शिविर की समस्त गतिविधियों का संचालन इस दृष्टिकोण से किया गया था कि उसके द्वारा विद्यार्थियों के शारीरिक एवं मानसिक विकास के साथ-साथ उनके जीवन में आध्यात्मिक मूल्यों का भी समावेश हो।

शिविर के तीनों दिन पूर्वाह्न सत्र का प्रारम्भ श्री स्वामी धर्मनिष्ठानन्द जी द्वारा योगासन और प्राणायाम की कक्षाओं के संचालन से किया गया। इन्हें सीखने में विद्यार्थियों ने अत्यधिक उत्साह एवं रुचि दिखायी। इसके उपरान्त श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज द्वारा मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक कहानी सुनाने का सत्र हुआ। इसके बाद शिविर के प्रथम एवं अन्तिम दिन के सत्र में प्रोफेसर राजेन्द्र कुमार भारद्वाज जी ने सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज के उदात्त जीवन-चरित तथा विश्व-प्रार्थना से सम्बन्धित प्रेरणाप्रद प्रवचन दिये। शिविर के द्वितीय दिवस परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने समन्वययोग पर प्रकाश डालते हुए उद्बोधन दिया। श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने तीनों दिन के पूर्वाह्न सत्र में अपने प्रेरणाप्रद प्रवचनों में श्रीमद्भगवद्गीता के महान् सत्यों पर विस्तृत व्याख्या की। पूर्वाह्न सत्र में प्रोफेसर आई. डी. जोशी जी, डा. सुनील थपलियाल जी तथा श्री रामकृष्ण पोखरियाल जी के निर्देशन में की गयी स्काउटिंग तथा खेलों की गतिविधियाँ भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं मनोरंजक कार्यक्रम रहीं।

अपराह्न सत्र, प्रतिदिन विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत भजन, कहानियों, पहेलियों और उच्चस्तरीय चुटकलों से हुआ। इस विलक्षण कार्यक्रम द्वारा विद्यार्थियों में अन्तर्निहित योग्यताओं एवं क्षमताओं की अभिव्यक्ति हुई। इसके तुरन्त बाद श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी

महाराज द्वारा आत्म-संवर्धन (सैल्फ-कल्चरल) तथा ध्यान सम्बन्धी निर्देशन विषयों पर शृंखलाबद्ध प्रवचन दिये गये। श्री स्वामी रामराज्यम् जी महाराज ने योगनिद्रा द्वारा तनावमुक्ति की कला का भी विद्यार्थियों को प्रशिक्षण दिया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दिये। इन दोनों प्रश्नोत्तर-सत्रों में विद्यार्थियों ने अत्यन्त उत्साहपूर्वक सराहनीय प्रश्न पूछे। श्री स्वामी यतिधर्मानन्द जी द्वारा प्रदर्शित जादू के खेल ने विद्यार्थियों का अत्यन्त मनोरंजन किया। शिविर के अन्तिम दिन डी. एल. एस. मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा चार 'वीडियोक्लिपिंग' (वीडियो के अंश) दिखाये गये जिनमें प्रेरक सन्देश निहित थे। विद्यार्थियों ने उन निहितार्थों को अभिव्यक्त करना था। इस प्रेरणाप्रद सत्र में विद्यार्थियों द्वारा इस आध्यात्मिक शिविर के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये गये।

समापन सत्र में परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज ने आशीर्वाद दिये। प्रमाण-पत्र तथा ज्ञान-प्रसाद वितरण के साथ ही कार्यक्रम समाप्त हुआ।

माँ गंगा के पावन तट पर, सद्गुरुदेव की पुण्यस्थली पर आयोजित किये गये इस आध्यात्मिक शिविर का एक अंग बनने वाले सभी विद्यार्थियों ने स्वयं को आशीर्वादित एवं धन्य अनुभव किया।

सद्गुरुदेव तथा परम पिता परमात्मा की कृपा-वृष्टि सब पर हो!

मुख्यालय आश्रम में विद्यार्थियों के लिए तीन प्रतियोगिताओं का आयोजन

''विद्यार्थियों को जैसी शिक्षा प्राप्त होती है, वैसे ही साँचे में वह ढलते हैं।'

(सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज)

भारत माँ के भावी नागरिकों के मन में नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को बैठाने के उदात्त उद्देश्य को ले कर मुख्यालय आश्रम के पावन अमृत-महोत्सव-वर्ष के अक्तूबर मास में विद्यार्थियों के लिए तीन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयीं ।

९ अक्तूबर २०१० को भजन-गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें २१ विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों से २१ विद्यार्थी सम्मिलित हुए तथा उन्होंने सुमधुर सुरीली आवाज में अपनी प्रतिभा प्रकट की। इनमें 'ऋषिकेश पब्लिक स्कूल की कु. सौम्या धियुंदी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया; 'निर्मल आश्रम दीपमाला पगरनी पब्लिक स्कूल' की कु. आयुशि चौहान द्वितीय तथा 'गवर्मेंट इन्टर कॉलेज, रायवाला की कुमारी शशि नौटियाल तृतीय स्थान पर रहीं।

परम पावन गुरुदेव के महिमाशाली जीवन एवं उदात्त शिक्षाओं से अवगत कराने के उद्देश्य से 'स्वामी शिवानन्द-जीवन तथा उपदेश' विषय पर १० अक्तूबर को निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। इसमें

ऋषिकेश के २३ विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के कुल ४३ विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में 'श्री गुरु रामराय पब्लिक स्कूल' की कुमारी श्रेया अग्रवाल, 'ओंकारानन्द सरस्वती निलयम' के श्री परीक्षित सिंह रावत तथा 'राजीव हायर सैकन्डरी स्कूल, राजीवग्राम' की कु. आरती सकलानी ने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त किया।

१६ अक्तूबर २०१० को भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था, जिसमें कुल २२ विद्यार्थियों ने 'चरित्र-निर्माण तथा विद्यार्थी जीवन में सफलता के सम्बन्ध में स्वामी शिवानन्द जी के उपदेश' विषय पर भाषण देते हुए सद्गुरुदेव को श्रद्धांजलि समर्पित की। इसमें 'ओंकारानन्द इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमैंट एण्ड टेक्नौलाजी' की कुमारी विजयश्री प्रथम स्थान पर रहीं तथा 'ऋषिकेश पब्लिक स्कूल' की आयुषी जैन द्वितीय एवं 'निर्मल आश्रम दीपमाला पगरनी पब्लिक स्कूल' के श्री राहुल रावत तृतीय स्थान पर रहे।

तीनों प्रतियोगिताओं में सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र तथा ज्ञान-प्रसाद और प्रथम तीन स्थानों पर आने वालों को विशेष नकद पुरस्कार भी दिये गये। भजन-गायन प्रतियोगिता के विजेताओं को उसी दिन अर्थात् ९ अक्तूबर को ही पुरस्कार वितरित कर दिये गये थे और अन्य दो प्रतियोगिताओं के विजेताओं को १६ अक्तूबर को पुरस्कार दिये गये। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की प्रतियोगिताओं में सम्मिलित होने तथा परम पूज्य श्री स्वामी योगस्वरूपानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज, परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज तथा परम पूज्य श्री स्वामी अद्वैतानन्द जी महाराज द्वारा पुरस्कार, प्रमाण-पत्र एवं ज्ञान-प्रसाद प्राप्त करने से सभी प्रतिभागियों ने स्वयं को आशीर्वादित और धन्य माना। श्री स्वामी योगवेदान्तानन्द जी महाराज ने इन प्रतियोगिताओं को सफल बनाने में किसी भी प्रकार से सहायक होने वाले सभी व्यक्तियों के प्रति हार्दिक धन्यवाद अभिव्यक्त किया।

भारतवर्ष की इस पावन धरा के सभी बालकों पर परम पिता परमात्मा एवं सद्गुरुदेव की अपार कृपावृष्टि हो, जिससे कि वे सब आगामी कल के सुयोग्य एवं सक्षम नागरिक बनें!

अनुशासित जीवन बितायें

आप समस्त संसार के वास्तविक मालिक अथवा शासक हैं। आप किसी के भी अधीन नहीं हैं। सभी प्रकार के दुःखों, भयों तथा शोकों का परित्याग कीजिए। शान्ति में सदा निवास कीजिए। सदा आत्मा की पूजा करें। अनुशासित जीवन बितायें। अपने चरित्र का निर्माण करें। धार्मिक बनें तथा दूसरों की भलाई के लिए सदा कार्य करें। अपने गुरु के प्रति भक्ति तथा श्रद्धा का भाव रखिए। धारणा-शक्ति का विकास करें।

काम, अभिमान, क्रोध, स्वार्थ, मद इत्यादि का परित्याग करें। आप चित्त-शुद्धि को प्राप्त करेंगे। जब विषय-सुखों के प्रति राग तथा आकर्षण का लोप हो जायेगा, तब आत्म-ज्ञान का उद्भव होगा। आप परमानन्द का उपभोग करेंगे।

स्वामी शिवानन्द

समाचार और प्रतिवेदन

मुख्यालय के समाचार

'शिवानन्द होम' द्वारा सेवा

'शिवानन्द होम ऐसे लोगों, जो सड़क के किनारे निरावलम्ब तथा मरणासन्न स्थिति में पाये जाते हैं और जिनकी देखभाल रखने वाला कोई नहीं होता, को चिकित्सीय सुविधा तथा स्नेहेमय देखभाल की उपलब्धि कराता है।'' (स्वामी चिदानन्द)

परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज ने स्वयं इस सेवा का प्रारम्भ कर, अपने अद्वितीय, एकनिष्ठ तथा अप्रतिम प्रेम को कार्य का मूर्तिमन्त रूप देते हुए एक जीवन्त और प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया है।

जिन्होंने हाल ही की बाढ़ में अपने प्राण गँवाये, उनकी स्मृति में : यहाँ उत्तराखण्ड में, अद्यपर्यन्त, दो-सौ से अधिक लोगों की मृत्यु हुई; सहस्रों ने अपने घर-बार और सामान गँवाये तथा न्यूनतम पेय-जल, स्वास्थ्य-व्यवस्था और चिकित्सिकीय सहाय से अपने जीवन टिका रहे हैं। नियन्त्रणविहीन बाढ़ में असंख्य गाँव बह गये हैं। सर्वशक्तिमान् ईश्वर, उन सबको आराम दे सकें और स्वस्थ बनाये, तथा दुःख, उदासी, घोर निराशा और अवसाद में वे न डूबे; उनकी हिम्मत, धैर्य बनाये रखे! हरिः शरणम्। हरिः शरणम्। हरिः शरणम्।

वर्षा के सातत्य के कारण, निकट की लक्ष्मणझूला कुष्ठरोगियों की संस्था की साठ वर्ष की आयु की एक वृद्ध महिला-मरीज़, उसका भोग बनी। वह दुर्भाग्य से पानी में फिसल गयी और मेरुदण्ड-रीढ़ के अस्थि-भंग को सहने को विवश हो गयी। अब वह 'शिवानन्द होम' में भर्ती है जो पूर्ण आराम और चिकित्सा युक्त है।

मेरुदण्ड की हानि, चोट के विषय में बात करें तो लगभग छह महीनों के पूर्व, अपने कोई भी शारीरिक अवयव के हलन-चलन, क्रिया में असमर्थ ऐसे सड़क पर पड़े एक सद्गृहस्थ को 'शिवानन्द होम' में भर्ती किये गये। स्नायु-तज्ञ (न्यूरो-सर्जन) द्वारा किये गये कुछ परीक्षण पश्चात्, उनका निदान, रीढ़ के ग्रीवा-भाग में अस्थि-भंग का, किया गया। उनकी आवश्यक परिचर्या के अतिरिक्त, कोई सुधार अपेक्षित नहीं था, ऐसा मुझे कहा गया। दो माह के पूर्ण आराम के पश्चात् मालिश और व्यायाम आरम्भित हुए। और एक सौभाग्यशाली दिन देखिए! उनकी एक उँगली में हलका सा हलन-चलन पाया गया! कितनी प्रगति! कुछ समयावधि व्यतीत होने के बाद, सतत प्रगति होती गयी और इस क्षण, वे बायें से दायें अपनी करवट बदल सकते हैं, उनके पाँव, घुटने और हाथ ऊँचे कर सकते हैं तथा गृह-व्यायाम-यन्त्र पर उन्होंने साइकिल चलाना शुरू किया है। ईश्वर-कृपा से दिन-प्रतिदिन उनकी प्रगति होती है और दैनिक सान्ध्य-सत्संग में वे भाग ले रहे हैं।

हमारी प्रार्थना है कि ईश्वर के चयनित आशीर्वादों, उनकी नित्यह्वह्वशाश्वत उपस्थिति, उनके उज्ज्वल अन्तर्यामीत्व तथा सब पर बरसती उनकी करुणा केह्वह्वहमारे जीवन के प्रति पल, हम सचेत रहें। ॐ श्री सद्गुरुदेवाय नमः !

''भूखे को भोजन दें! नग्न को वस्त्र दें! रोगियों की सेवा करें! यही दिव्य जीवन है।'' **स्वामी शिवानन्द**

मुख्यालय आश्रम में नवरात्रि एवं विजयादशमी महोत्सव

सर्वमगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

हे नारायणी, हे गौरी, सम्पूर्ण पुरुषार्थों को सिद्ध करने वाली, सभी मंगलों का धाम, सभी की रक्षा करने वाली, तीन नेत्रों वाली, माँ तुम्हें नमस्कार है।

नवरात्रि महोत्सव नौ दिनों की उस पूजा का शुभ अवसर है जिसमें परब्रह्म परमात्मा की श्री महादुर्गा, श्री महालक्ष्मी तथा श्री महासरस्वती के रूप में आराधना की जाती है। मुख्यालय आश्रम में सदा की भाँति इस वर्ष भी नवरात्रि महोत्सव अत्यन्त श्रद्धा-भक्ति सहित भव्य रूप में ८ से १६ अक्तूबर तक मनाया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन शिवानन्द सत्संग भवन में किया गया था। सुन्दर सुगन्धित पुष्पों तथा रंग-बिरंगे वस्त्रों एवं विद्युत् बल्बों के प्रकाश से सुसज्जित वेदियों पर देवी माँ अपने तीनों रूपोंह्लश्री महादुर्गा, श्री महालक्ष्मी तथा श्री महासरस्वतीह्लके अत्यन्त मनोहर चित्रों में विराजमान की गयी थीं।

इन सभी दिनों में माँ पराशक्ति की अत्यन्त श्रद्धापूर्वक भव्य रूप में पूजा की गयी। प्रतिदिन प्रातःकाल कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथि भवन के सुसज्जित कक्ष में विधिवत् चण्डीपाठ से होता था तथा रात्रि सत्संग में नियमित पारायण, प्रार्थनाओं एवं स्तोत्र-पाठ के साथ-साथ श्री दुर्गा सप्तशती पाठ संस्कृत में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय के महासचिव परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा किया जाता था। अँगरेजी तथा हिन्दी में उनके अर्थों का पाठ क्रमशः मुख्यालय के उपाध्यक्ष परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज तथा श्री स्वामी राधाकृष्णानन्द जी महाराज द्वारा किया जाता था। सद्गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज द्वारा दिये गये नवरात्रि सन्देश भी परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा पढ़ कर सुनाये गये। उसके उपरान्त देवी माँ की अष्टोत्तरशत नामावली से पुष्पार्चना की जाती थी। तत्पश्चात् आरती एवं प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पन्न किया जाता था।

नवमी के दिन माँ सरस्वती की अत्यन्त श्रद्धापूर्वक अर्चना एवं आरती सहित पूजा की गयी। इसके उपरान्त कन्या-पूजन हुआ। नौ देवियों की प्रतिनिधि रूप नौ कन्याओं का भोजन, वस्त्र तथा दक्षिणा सहित पूजन किया गया। यज्ञशाला में विशेष चण्डी-यज्ञ सम्पन्न किया गया।

८ अक्तूबर से १५ अक्तूबर तक प्रतिदिन प्रातः ९ से ११ बजे तक आश्रम के शिवानन्द मातृ सत्संग द्वारा शिवानन्द सत्संग भवन में देवी माँ की वेदी के समक्ष ललिता सहस्रनाम पारायण तथा भजन-कीर्तन द्वारा पूजन किया गया। १७ अक्तूबर २०१० को देवी माँ की असुरों पर विजय के प्रतीक-स्वरूप विजयादशमी का परम पावन महान् दिवस अत्यन्त हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ भजन-कीर्तन से हुआ। उसके उपरान्त पराशक्ति भगवती माँ की विशेष पूजा एवं पुष्पार्चना की गयी। विद्यारम्भ दिवस के रूप में इस दिन वेदों, उपनिषदों, ब्रह्मसूत्रों, श्रीमद्भगवद्गीता, वाल्मीकि रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत तथा परम पावन गुरुदेव परम पूज्य श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की पुस्तक 'साधना' में से चयनित अंशों का पाठ परम पूज्य श्री स्वामी पद्मनाभानन्द जी महाराज द्वारा किया गया। परम पूज्य श्री स्वामी निर्लिप्तानन्द जी महाराज ने इस पावन दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए प्रवचन

दिया। इस पावन अवसर पर पाँच डीवीडी तथा एक पुस्तक का भी विमोचन किया गया।

सायंकाल में श्री विश्वनाथ घाट पर अर्चना तथा शतदीप समर्पण सहित माँ भागीरथी का पूजन भी सम्पन्न किया गया। रात्रि सत्संग में दैनिक प्रार्थनाओं, स्तोत्र-पाठ तथा देवी माँ की अर्चना-आराधना के अतिरिक्त भक्त साधकों को परम आराध्य गुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के वीडियो के माध्यम से दर्शन-श्रवण का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। आरती एवं प्रसाद-वितरण सहित कार्यक्रम सम्पूर्ण हुआ।

आश्रम के समस्त अन्तेवासी, अतिथि, दूर-दूर से पधारने वाले भक्त जन, योग-वेदान्त फारेस्ट एकाडेमी के छात्र तथा स्थानीय लोग इस नवरात्रि और विजयादशमी के महोत्सव में सम्मिलित हुए।

माँ भगवती की कृपा-वृष्टि सब पर हो !

* * *

दिव्य जीवन संघ की शाखाओं के प्रतिवेदन

अन्तर्देशीय शाखाएँ

अम्बाला (हरियाणा): माह सितम्बर, २०१०, में शाखा के प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग तथा प्रति मंगलवार को श्री हनुमान जी के स्तोत्र-पाठ नियमित पूर्ण हुए। दिनांक ८ सितम्बरह्लह्लगुरुदेव के १२३ वें जन्मदिन पर तथा दिनांक २४ सितम्बरह्लह्लगुरुमहाराज श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज के ९४ वें जन्मदिन पर विशेष सत्संग, प्रसाद-वितरण और छात्रों को भेंट-वितरण एवं दो होमियोपैथिक औषधालयों द्वारा सामाजिक सेवाएँ आदि सम्पन्न हुए।

आस्का (उड़ीसा): शाखा के प्रति रविवार और प्रति गुरुवार के साप्ताहिक द्विवार सत्संग, जुलाई माह के दिनांक २६ से अगस्त के दिनांक ३ पर्यन्त चल-सत्संगों की नियमित गतिविधियाँ और श्री गुरु-पूर्णिमा, आराधना-दिन, गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रम पूर्ण करके, शिवानन्द-जयन्ती को अस्पताल में भर्ती मरीजों को फल-वितरण किया गया।

बड़कुँआल (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजाएँह्लह्लउनके पश्चात् प्रार्थना-सभा, श्रीमद् भागवतम् का स्वाध्याय अपराह्न में, प्रति गुरुवार सन्ध्या में सत्संग और प्रभात में पादुका-पूजा तथा शिवानन्द-दिवस को विशेष पादुका-पूजन आदि परिचालित किये। आराधना दिवस को ब्राह्ममुहूर्तीय प्रार्थना-सभा, प्रभातीय पादुका-पूजा और सांध्य-सत्संग सम्पन्न किये गये।

बढ़ियाउस्ता (उड़ीसा): शाखा ने दिन-भर के प्रातःकालीन आध्यात्मिक कार्यक्रमह्लह्ल२३ प्रतिभागियों के साथ, प्रभातीय कार्यक्रमह्लह्ल१०० प्रतिभागियों सहित, लक्षार्चना सहित विशेष पूजा, भजन-कीर्तन आदि अनेक आसपास के ग्राम्य-जनों सहित ४०० भक्तों के साथ तथा प्रसाद-सेवन, निर्धनों को भोजन-वितरण, सान्ध्य-सत्संग में प्रवचन आदिह्लह्लचिदानन्द-दिवस को पूर्ण किये।

बाँसवाड़ा (राजस्थान): शाखा द्वारा शिवानन्द-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये, जिनमें, प्रार्थना-स्तोत्रपाठ, रामायण-पाठ, प्रवचन, छात्रों को राष्ट्रीय-आचार संहिता और गुरुदेव की २०

प्रतिमाओं का वितरण, आरती-प्रसाद आदि समाविष्ट थे।

बरगढ़ (उड़ीसा): नियमित गतिविधियों के उपरान्त, शाखा ने विशेष गतिविधियों में : (१) श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव; (२) आराधना-दिन : कुष्ठरोगियों को भोजन और वस्त्र-वितरण, प्रवचन सहित; (३) शिवानन्द-जयन्ती : निराधार लोगों को अन्न-वस्त्र-वितरण और अन्य कार्यक्रम; (४) दिनांक १६ सितम्बर से २३ सितम्बर पर्यंत भागवत-प्रवचनों-युक्त सप्ताह; (५) चिदानन्द-जयन्ती : कीर्तन, पादुका-पूजा, मन्त्र-जप, भक्तों द्वारा भावपूर्ण श्रद्धांजलियाँ, कुष्ठरोगियों की संस्था में अन्न वस्त्र-वितरण आदि की सम्पन्नता की।

बारिपदा (उड़ीसा): निज आश्रम में नियमित पूजा, सितम्बर १० से सितम्बर के दिनांक २९ पर्यंत चल-सत्संग तथा दिनांक ५ सितम्बर को मासिक साधना-दिवस के अतिरिक्त, शाखा ने, श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव में, पादुका-पूजा और एक कुष्ठरोगियों की संस्था में ३० बालकों को भोजन, मूक-बधिर की शाला के १२० बालकों को भोजन, श्री शिवानन्द-जयन्ती और श्री चिदानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा सहित मूक और बधिर के लिए शाला में बिस्किट और मिठाइयों का वितरणह्लह्लआदि विशेष गतिविधियाँ सम्पन्न कींह्ल

बल्लारि (कर्नाटक): शाखा की नियमित गतिविधियों में दैनिक पूजा-सत्संग-साप्ताहिक सत्संग के उपरान्त, शिवानन्द-जयन्ती कोह्लह्लसितम्बर के दिनांक ६ से दिनांक ८ पर्यन्त तीन दिवसीय प्रवचनों का तथा पादुका-पूजा और विशेष सत्संग शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को और दिनांक २३ सितम्बर को आयुर्वेदिक डाक्टरों द्वारा नाड़ी-परीक्षण आदि विशेष गतिविधियाँ पूर्ण हुईं।

भिलाई (छत्तीसगढ़): शाखा का मासिक-सत्संग और पादुका-पूजा दिनांक १ अगस्त और दिनांक १२ सितम्बर को एवं भिलाई की उभय शाखाओं द्वारा संयुक्त रूप से आराधना-दिन को १०० प्रतिभागियों सहित तथा शिवानन्द-जयन्ती को और चिदानन्द-जयन्ती को विशेष कार्यक्रम आयोजित हुए।

भुवनेश्वर (उड़ीसा): नियमित गतिविधियाँ : प्रति गुरुवार को सायंकाल तथा प्रति रविवार को पूर्वाह्न में नियमित सत्संग, हर माह अन्तिम रविवार को साधना-दिन, चिदानन्द-दिवस को साढ़े पाँच घण्टों पर्यन्त अखण्ड कीर्तन। विशेष गतिविधियाँ : (१) १२६ छात्रों और ६ शिक्षकों की प्रतिभागिता सहित दिनांक १८ जुलाई को युवा कैम्प; (२) दिनांक २२ अगस्तह्लह्लयुवा कैम्पह्लह्ल८० छात्रों, ३ शिक्षकों और कुछेक अभिभावकों की प्रतिभागिता में; (३) श्री गुरु-पूर्णिमा : आदरणीय छह सन्तों की पावन उपस्थिति में ९ घण्टों के आध्यात्मिक कार्यक्रम; (४) आराधना-दिन : आदरणीय १२ सन्तों की पावन उपस्थिति में ९ घण्टों के आध्यात्मिक कार्यक्रम; (५) ९ दिवसीय साधना-सत्रह्लह्ल २६ जुलाई से दिनांक ३ अगस्त पर्यंतह्लह्लप्रातःकालीन ध्यान, लक्षार्चना सहित पादुका-पूजा, स्वाध्याय, दिनांक २६ जुलाई से दिनांक १ अगस्त पर्यन्त भागवत कथा, प्रवचन।

बीकानेर (राजस्थान): शाखा की दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक और शैक्षणिक आदि गतिविधियों के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में (१) श्री कृष्ण-जयन्ती; (२) श्री गणेश चतुर्थी; (३) शिवानन्द-जयन्ती

तथा चिदानन्द-जयन्ती विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित; (४) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को पादुका-पूजा, भक्तों द्वारा श्रद्धांजलियाँ, विकलांग बालकों की तीन पाठशालाओं में मिठाइयाँ, फल, बिस्किट आदि का छात्रों को वितरण।

छत्रपुर (उड़ीसा): शाखा ने निज दैनिक, साप्ताहिक सत्संग, दिनांक ८ और २४ को पादुका-पूजा तथा संक्रान्ति दिनोंह्वह्व१७ अगस्त और १७ सितम्बर को सुन्दरकाण्ड-पारायण सम्पन्न करने के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में (१) आराधना-दिन को नगर-संकीर्तन सहित अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रम, (२) श्री गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती, (३) श्री कृष्ण-जयन्ती, (४) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथिह्वह्व११ घण्टों के आध्यात्मिक कार्यक्रमों में नगर-संकीर्तन और निर्धनों को अन्न-वस्त्र-दान आदि के, (५) शिवानन्द-जयन्ती, (६) श्री गणेश-चतुर्थी, (७) चिदानन्द-जयन्ती को अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों सहित विशेष में विकलांग और निर्धन छात्रों को मिठाइयों के वितरण और ज्ञान-प्रसाद।

चेन्नै, अन्नानगर (तमिल नाडु): दिनांक २९ अगस्त को शाखा ने, 'योग-उपाधि-कसौटी' रखी।

चेन्नै, वाषरमेन पेट (तमिल नाडु): शिवानन्द-जयन्ती मनाने हेतु शाखा द्वारा एक विशेष उत्सव आयोजित हुआ।

चिकिटि (उड़ीसा): शाखा ने, झोनल-क्षेत्रीय दिव्य जीवन शाखा-संयोजन समिति की संयुक्तता में, दक्षिण उड़ीसा ने आदरणीय श्री स्वामी शिवानन्द-गुरुसेवानन्द जी महाराज का अमृत-महोत्सव, दिनांक १ सितम्बर, श्री कृष्ण-जयन्ती को मनाया। इसके अनुसन्धान में, दिनांक १७ अगस्त से दिनांक ३१ अगस्त पर्यन्त आध्यात्मिक पक्षह्वह्व१५ दिवसीय आध्यात्मिक साधनाह्वह्वका आयोजन किया। उसमें, ३ शाखाओं में श्रीमद् भागवत के एकादश स्कन्ध का पारायण, ७ शाखाओं में श्रीमद् भगवद् गीता पारायण, २ शाखाओं में श्री सुन्दरकाण्ड पारायण, ७ शाखाओं में ३ घण्टों का अखण्ड महामन्त्र-कीर्तन, ६ शाखाओं में, ३ घण्टों का, सामूहिक महामृत्युंजय मन्त्र-जप, १२ पाठशालाओं में आध्यात्मिक, नैतिक शिक्षा-प्रदान और योगासन-वर्ग तथा श्री श्री गोपालकृष्ण सेवाश्रम में भी।

दिगपहंडी (उड़ीसा): शाखा की नियमितह्वह्व दैनिक, साप्ताहिक, संक्रान्ति दिन और शिवानन्द-दिवस तथा चिदानन्द-दिवस कीह्वह्वगतिविधियों के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में (१) आराधना-दिन को पादुका-पूजा और नारायण-सेवा, (२) विशेष साधना-दिनह्वह्व दिनांक २४ अगस्त को श्रीमद् भगवद् गीता पारायण, (३) श्री कृष्ण-जयन्ती और नन्दोत्सव दो दिन के, (४) शिवानन्द-जयन्ती को विशेष साधना-दिन, (५) चिदानन्द-जयन्ती को आदरणीय स्वामी श्री रामकृपानन्द जी का प्रवचन विशेष में, (६) दैनिक चल-सत्संग : दिनांक ९ सितम्बर और दिनांक २३ सितम्बर की दो जयन्तियों के मध्य, १५ दिनों पर्यन्त, (७) आध्यात्मिक और नैतिक शिक्षा तथा योगासन-वर्ग सहित स्कूल कार्यक्रम।

फरीदपुर (उत्तर प्रदेश): (१) दैनिक पूजा, (२) माहभर 'श्री रामचरित-मानस' पारायण और विशेष पूजा पूर्णाहुति में, पूर्णिमा को हवन, साप्ताहिक सत्संगह्वह्वप्रति बुधवार कोह्वह्वविविध कार्यक्रमह्वह्वप्रति सप्ताह के साथ

नारायण-सेवा आदि शाखा की नियमित गतिविधियाँ हैं और शिवानन्द-जयन्ती को पूजा और विशाल भण्डारा।

गुडुर (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के साप्ताहिक सत्संग प्रति रविवार को होते हैं और शिवानन्द-जयन्ती तथा चिदानन्द-जयन्ती को विशेष उत्सव आयोजित करके राजकीयह्वह्वसरकारी अस्पताल के भर्ती हुए मरीजों को और स्थानिक जेलह्वह्वबन्दीगृहह्वह्वके कैदियों को मिठाइयाँ और ब्रेड का वितरण किया गया।

जयपुर, मालवीयनगर (राजस्थान): शाखा की दैनिक ब्राह्ममुहूर्तीय, प्रभातीय और सान्ध्य नियमित गतिविधियों के उपरान्त, साप्ताहिक गतिविधियाँ भी सुचारु रूप से सम्पन्न होने के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में नन्दोत्सव को विशेष उत्सव, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को पादुका-पूजा एवं दिनांक १८ सितम्बर से श्री रामायण कथा आदि सुआयोजित किये गये।

जयपुर (उड़ीसा): शाखा की नियमित गतिविधियों की उत्तम सम्पन्नता के अतिरिक्त विशेष गतिविधियों में (१) श्री कृष्ण-जयन्ती को, ५ घण्टों के वैविध्य और महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक कार्यक्रमों का मध्यरात्रिपर्यन्त सुन्दर आयोजन हुआ। (२) पुण्यतिथि : परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को, ८० प्रतिभागियों के सहित ९ घण्टों के आध्यात्मिक कार्यक्रमों की सुचारु सम्पन्नता हुई। (३) शिवानन्द-जयन्ती : १० घण्टों के विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों के उपरान्त हवन, स्वाध्याय आदि भी किये गये। (४) चिदानन्द-जयन्ती : अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रमों के आधिक्य में ११० भक्तों की प्रतिभागिता सहित निराधारों को अन्न-पैकेटों का वितरण हुआ। शाखा की गतिविधियों ने कॉलेज-छात्रों को भी आकर्षित किया है और १५-२० छात्रों ने सब गतिविधियों में भाग लिया।

काकिनाडा, माधवपत्तनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा के साप्ताहिक सत्संगों और स्तोत्र-श्लोक-पाठ, प्रति रविवार और प्रति मंगलवार को आयोजित हुए। शिवानन्द-जयन्ती और **चिदानन्द-जयन्ती** के कार्यक्रमों में आध्यात्मिकता की प्रचुरता होने से अति लाभकारी हुए। शाखा के २६ प्रतिभागियों ने मुख्यालय के सब कार्यक्रमों में निज उपस्थिति दी।

कंटाबॉझी (उड़ीसा): माहावधि में, शाखा ने, भगवद् गीता के स्वाध्याय सहित तीन सत्संग सम्पन्न किये।

खातिगुडा (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक, साप्ताहिक, चल, एकादशी के सत्संग सुचारु रूप से सम्पूर्ण किये और दिनांक १ अगस्त को और दिनांक ४ सितम्बर को, नारायण-सेवा और साधना-दिन को १२ घण्टों का महामन्त्र का कीर्तन सम्पन्न किये। शाखा की विशेष गतिविधियों में, (१) पूर्णाहुति-उत्सव : दिनांक ३ अगस्त को श्रीमद् भागवत पारायण की समाप्ति के पश्चात् हवन किया गया। (२) आराधना-दिन : ब्राह्ममुहूर्त से आरम्भित कार्यक्रम दिनभर सुन्दरता से पूर्ण हुए, जिनमें, १२ घण्टों का महामृत्युंजय के मन्त्र का जप और निर्धनों को अन्न और वस्त्र के दान किये गये। (३) परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को अनेक विविध कार्यक्रमों में १२ घण्टों का मन्त्र-जप, नारायण-सेवा भी थे। (४) शिवानन्द-जयन्ती : भक्तों को प्रसाद-वितरण सहित समान आध्यात्मिक कार्यक्रमों

का आयोजन (५) चिदानन्द-जयन्ती : समान आध्यात्मिक कार्यक्रमों की सम्पन्नता।

खुर्दा रोड, जटनी (उड़ीसा): दैनिक सत्संग तथा मासिक साधना-दिन की नियमित गतिविधियों के आधिक्य में, श्री गुरु-पूर्णिमा और साधना-दिन के कार्यक्रमों में आध्यात्मिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त निर्धनों को अन्न-दान भी समाविष्ट था। परम पूज्य श्री स्वामी चिदानन्द जी महाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को उपरोक्त कार्यक्रमों के सहित नगर-संकीर्तन हुआ, 'अद्वितीय गुरु' विषय पर पूज्य गुरुमहाराज के बारे में प्रवचन किये गये। **शिवानन्द-जयन्ती** को, समान कार्यक्रमों के साथ, 'शिवानन्द-योगह्वह्वविश्व-शान्ति का मार्ग' विषयक प्रवचन किये गये। दिनांक ८ सितम्बर से १२ सितम्बर पर्यन्त ५ दिवसीय ज्ञान-सत्र, दिनांक २५ सितम्बर को विशेष साधना-दिन, शाखा के दिवंगत अध्यक्ष श्री पद्मचरण पाण्डे जी की आत्म-शान्ति के लिए, दिनांक ११ जुलाई को एक प्रार्थना-सभा, गान्धी-जयन्ती को ६ संन्यासी तथा मुख्यालय के एक ब्रह्मचारी जी ने सभा में उपस्थिति दी एवं ४५ कुष्ठरोगियों को कोरे राशन के पैकेट्स, फल और तौलियों का वितरण किया गया।

खुर्जा (उत्तर प्रदेश): प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग, एकादशी के मातृ-सत्संग के आधिक्य में आयोजित विशेष कार्यक्रमों में, शिवानन्द-जयन्ती मनायी गयी। महिलाओं और पुरुषों के लिए योगासन-वर्ग तथा ध्यान-कक्ष चलते रहे। 'स्वामी देवानन्द होमियोपैथिक औषधालय' मरीजों को प्रतिदिन औषधियाँ देता है।

मदुरै, शिवानन्द सेवाश्रम (तमिल नाडु): शाखा ने दिनांक १ सितम्बर से दिनांक ८ सितम्बर पर्यन्त उत्तम और विशिष्ट प्रकार से 'शिवानन्द-जयन्ती' मनाने हेतु एक प्रवचन-शृंखला सुआयोजित की। ४ स्कूलों सहित भिन्न-भिन्न स्थानों पर १३ वक्ताओं ने प्रवचन दिये।

मोईरंग (मणिपुर): दैनिक भजन और प्रति रविवार के साप्ताहिक सत्संग के सहित शाखा ने श्री कृष्ण-जयन्ती, श्री शिवानन्द-जयन्ती, श्री राधा-अष्टमी और श्री वामन-जयन्ती को विशेष सत्संग और नाम-संकीर्तन जैसे विशेष कार्यक्रम आयोजित किये।

नन्दिनीनगर (छत्तीसगढ़): शाखा की दैनिक प्रभातीय और सान्ध्य गतिविधियों, साप्ताहिक चल-सत्संग, साप्ताहिक और एकादशी के मातृ-सत्संगों और हर माह के दिनांक ३ को महामन्त्र-संकीर्तन की गतिविधियों के आधिक्य में, विशेष गतिविधियों में, (१) श्री कृष्ण-जयन्ती को मध्यरात्रि पर्यन्त कार्यक्रम; (२) शिवानन्द-जयन्ती को ४ दिवसीय उत्सव तथा दिनांक ५ सितम्बर, १५० कि.मी. जितनी दूरी से भी आने वाले भिन्न-भिन्न स्थानों के १४ विद्वानों के श्री रामायण पर प्रवचन; (३) गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को उनके जीवन तथा उपदेशों विषयक विशेष प्रवचन; (५) शिवानन्द-चिदानन्द-जयन्ती दिवस : आध्यात्मिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त एक अस्पताल में भर्ती हुए मरीजों को फल-वितरण; (६) श्री गणेश उत्सव के १२ दिवसीय कार्यक्रमों के समापन में विशेष सत्संग और हवन; (७) ७ दिनों पर्यन्त शिव-अभिषेक आदि समाविष्ट थे। (८) दिनांक ७ को, १२ घण्टों का, शिवानन्द-मन्त्र का जप।

नयागढ़ (उड़ीसा): नियमित आध्यात्मिक साप्ताहिक और मातृ-सत्संग, श्री सुन्दरकाण्ड पारायण आदि गतिविधियों के साथ शाखा चिदानन्द-अन्नक्षेत्र भी नियमित चलाती है। श्री गुरु-पूर्णिमा और आराधना-दिवस को विविध आध्यात्मिक कार्यक्रमों में आदरणीय

श्री स्वामी धर्मप्रकाशानन्द जी का प्रवचन भी हुआ। साधना-सप्ताह में दैनिक चल-सत्संग, श्री कृष्ण-जयन्ती को मध्यरात्रिपर्यन्त के कार्यक्रमों में लक्षार्चना और श्रीमद् भगवद् गीता हवन भी समाविष्ट थे। गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को प्रभातीय ध्यान, पादुका-पूजा, स्वाध्याय और नारायण-सेवा का सुआयोजन हुआ।

परलाखेमुंडी (उड़ीसा): दैनिक, साप्ताहिक और चल-सत्संग की गतिविधियाँ, शाखा की नियमित गतिविधियाँ हैं। विशेष गतिविधियों में, (१) आराधना-दिवस को कुष्ठरोगियों की एक संस्था में फल और मिठाइयों का वितरण; (२) श्री गुरुपूर्णिमा से आराधना-दिवस पर्यन्त नियमित दैनिक विशेष सत्संग; (३) गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को पादुका-पूजा, सत्संग और कुष्ठरोगियों की एक संस्था में मिठाइयाँ और फलों का वितरण; (४) दैनिक विशेष सत्संग : दिनांक ६ सितम्बर से दिनांक २४ सितम्बर पर्यन्तह्वह्व१९ दिन; (५) शिवानन्द-जयन्ती; (६) चिदानन्द-जयन्ती।

फूलबानी (उड़ीसा): शाखा ने दैनिक द्विवार पूजाएँ, प्रति शनिवार को साप्ताहिक सत्संग तथा दिनांक ८ अगस्त से दिनांक २४ अगस्त पर्यन्त पादुका-पूजा आदि कार्यक्रम परिचालित किये।

रायगढ़ (छत्तीसगढ़): शाखा ने श्री गुरु-पूर्णिमा, शिवानन्द-जयन्ती और चिदानन्द-जयन्ती को विशेष सत्संग आयोजित किये। श्रीमद् भगवद् गीता पारायण के समापन में एक हवन किया गया।

रायपुर (छत्तीसगढ़): शाखा की नियमित गतिविधियाँ : दैनिक डेढ़ घण्टों पर्यन्त समूह-जप और समूह-स्तोत्रपाठ; प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग; प्रति सोमवार को साप्ताहिक भजन-संध्या, प्रति एकादशी को विशेष पूजा और स्तोत्र-पाठ। विशेष गतिविधियाँ : (१) श्री कृष्ण-जयन्ती को सायंकाल ६-०० से मध्यरात्रि पर्यन्त जप-स्तोत्र-पाठ और संकीर्तन; (२) शिवानन्द-जयन्ती को और (४) चिदानन्द-जयन्ती को अनेक आध्यात्मिक कार्यक्रमों के उपरान्त कुष्ठरोगियों की एक संस्था में फल-वितरण; (५) श्री गणेश चतुर्थी को विशेष पूजा की गयी।

राजकोट (गुजरात): शाखा की नियमित गतिविधियाँ : रविवार तथा गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग; एक केन्द्र पर प्रति शनिवार को श्री रामचरित-मानस पर प्रवचनोंयुक्त सत्संग; अन्य एक केन्द्र पर दैनिक सत्संग; प्रति गुरुवार और शुक्रवार को महिला केन्द्र पर सत्संग; गत तीन महीनों में होमियोपैथिक औषधालय ने १५०० मरीजों की जाँच करके औषधियाँ दीं। प्रति मंगलवार को दन्त-चिकित्सालय जिसने ८ मरीजों को निःशुल्क कृत्रिम दाँतह्वह्वडेन्चर दिये। नेत्र-यज्ञ : ३ कैम्प का आयोजनह्वह्व ३०० मरीजों की जाँच; ३६ मरीजों की वीरनगर में मोतियाबिन्दु की निःशुल्क शल्य-क्रिया। विशेष गतिविधियाँ : शिवानन्द-जयन्ती, चिदानन्द-जयन्ती और गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि को विशेष पूजा; गुरु-पूर्णिमा को साधना-शिविर; १०० प्रतिभागियों के साथ श्रावण माह में शिव-स्तोत्र-पाठ सहित दैनिक सत्संग; दिनांक २८ सितम्बर को एक दन्त-यज्ञ; हर माह की १३ तारीख को अन्न-दान, विकलांग छात्रों को २ व्हील-चेअर्स का दान; २ हाथ-लारियोंह्वह्वठेलों का विधवा महिलाओं को दान; १३ मरीजों का ३०,७०० रुपये की आर्थिक सहाय।

सालेपुर (उड़ीसा): शाखा की दैनिक प्रभातीय और सान्ध्य; साप्ताहिक गतिविधियाँ; शिवानन्द-दिवस की पाद-पूजा; प्रथम-द्वितीय और चतुर्थ रविवारों की विविध आध्यात्मिक गतिविधियाँ; तृतीय रविवार को मासिक साधना-दिन तथा पंचम रविवार को महामन्त्र का अखण्ड जप आदि के सहित विशेष गतिविधियों में, अगस्त माह मेंह्लह्लयोगासन-प्रशिक्षण में ९६ छात्रों ने भाग लिया; आराधना-दिन को पादुका-पूजा और विशेष सत्संग तथा स्वामी शिवानन्द चैरिटेबल अस्पताल ने ७७ मरीजों के इलाज किये।

साउथ बलंडा (उड़ीसा): शाखा की दैनिक पूजा, साप्ताहिक सत्संग, प्रति रविवार को बाल-विकास कार्यक्रम; संक्रान्ति-दिवस को अखण्ड संकीर्तन १२ घण्टों का; श्री कृष्ण-जयन्ती को १२ घण्टों के मन्त्र-जप के पश्चात् मध्यारात्रि पर्यन्त विशेष पूजा और संकीर्तन। दिनांक २ सितम्बर से दिनांक ७ सितम्बर पर्यन्त साधना-सप्ताह; दिनांक ८ सितम्बर से दिनांक १४ पर्यन्त रामायण-कथा; गुरुमहाराज की द्वितीय पुण्यतिथि और शिवानन्द-जयन्ती, चिदानन्द-जयन्ती को विशेष आध्यात्मिक कार्यक्रम जिनमें, 'श्रद्धांजलि-सत्संग' और बालकों को तथा कुष्ठरोगियों की एक संस्था में ३२ अन्तवासियों को क्रमशः मिठाइयाँ और अन्न-वितरण। ३५० भक्तों द्वारा प्रसाद-सेवन।

सुनाबेडा (उड़ीसा) : शाखा ने साप्ताहिक द्विवार सत्संग, पुण्यतिथि के अवसर पर नित्य विशेष ढाई घण्टों के सत्संग और पुण्यतिथि को पादुका-पूजा, हवन, आरती आदि सम्पन्न किये।

वडोदरा (गुजरात): शाखा द्वारा, प्रति गुरुवार को साप्ताहिक सत्संग, शिवानन्द-जयन्ती तथा चिदानन्द-जयन्ती को मन्त्र-जप, पादुका-पूजा और अस्पताल में फल-वितरण, चिदानन्द-जयन्ती को ५६ छात्रों को रुपये ४०,००० की छात्रवृत्तियाँ, होमियोपैथिक औषधालय सप्ताह में ४ दिन और आयुर्वेदिक औषधालय में सप्ताह में २ दिन, ग्राम्य-विस्तार में एक नेत्र-यज्ञ के आयोजन में २०० मरीजों की जाँच, २१ मोतियाबिन्दु-शल्यक्रिया आदि सम्पन्न हुए।

विशाखपट्टनम् (आन्ध्र प्रदेश): शाखा की दैनिक, साप्ताहिक गतिविधियों के उपरान्त, विशेष गतिविधियों में,श्री कृष्ण-जयन्ती को विविध कार्यक्रम जैसै कि अखण्ड-संकीर्तन, सुशोभित झूला, सुन्दर बालकृष्ण की मूर्ति, विविध पोषाक में बालक आदि तथा शिवानन्द-जयन्ती, चिदानन्द-जयन्ती को आध्यात्मिक कार्यक्रमों के अतिरिक्त अस्पताल में फल-वितरण, विशेष कलाकारों द्वारा भजन-प्रस्तुति; तथा कुष्ठरोगियों के ७५ मरीजों को फल का और बिस्किटों का वितरण।

अहंकार को नष्ट करना, रुचि और अरुचि के द्वन्द्वों को दूर करना, आत्मा का साक्षात्कार करना, सब जीवों के प्रति प्रेम करना, आत्म-भाव से मानव-समाज की सेवा करनाह्लह्लइन्हीं सबमें धर्म का सार है। **स्वामी शिवानन्द**

सूचना

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल साधना शिविर

दिव्य जीवन संघ, पश्चिम बंगाल का वार्षिक साधना शिविर २२ से २६ जनवरी २०११ तक मानव सेवा ट्रस्ट कॉम्प्लैक्स, हामिरागाच्छी, रेलवे स्टेशनह्वह्वमालिया, पश्चिम बंगाल में होगा।

पंजीकरण राशि रु. ३००/- प्रति व्यक्ति।

नामांकन प्राप्त करने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०१०। नामांकन के लिए फ़ार्म श्री विजय स्वाँई, ४ सी मेहेर अली मंडल स्ट्रीट, मोमिनपुर, कोलकाताह्वह्व७०० ०२७, पश्चिम बंगाल को भेजने होंगे।

नामांकन तथा अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें : डा. पी. के. सामन्तरे, मो. नं. ०९००२०८०५१४; श्री सी. बी. सहगल, मो. नं. ०९८३०१४४१४७; श्री नितुल पारिख, मो. नं. ०९८३००४०७३० और श्री विजय स्वाँई, मो. नं.०९३३९३९२८४५।

सभी भक्तों से निवेदन है कि शिविर में भाग लें। **द डिवाइन लाइफ सोसायटी**

* * *

अखिल उड़ीसा द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३३ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर

परम पूज्य गुरुदेव श्री स्वामी शिवानन्द जी महाराज की अपार कृपा से अखिल उड़ीसा द डिवाइन लाइफ सोसायटी का ३३ वाँ आध्यात्मिक सम्मेलन एवं युवा शिविर २८ से ३० दिसम्बर २०१० तक उड़ीसा को अंगुल जिले के बिजिगोल में पंचायत हाई स्कूल (एन. टी. पी. सी. के निकट) में होना निश्चित हुआ है। कार्यक्रम के ही एक भाग के रूप में युवा शिविर भी २७ से ३० दिसम्बर २०१० तक होगा।

सम्मेलन में द डिवाइन लाइफ सोसायटी मुख्यालय, ऋषिकेश से वरिष्ठ सन्त तथा अन्य संस्थाओं से भी विद्वान् सज्जन एवं सन्त सम्मिलित हो कर आशीर्वचन प्रदान करेंगे। द डिवाइन लाइफ सोसायटी की सभी शाखाओं के सदस्य भक्तों को सादर आमन्त्रण है कि आध्यात्मिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार तथा विश्व कल्याण मंगल के उद्देश्य को ले कर किये जाने वाले इस सम्मेलन में भाग लें।

१. प्रतिनिधि शुल्क रु. ३५०/- प्रति व्यक्ति; २. युवा शिविर नामांकन शुल्क रु. ११/- प्रति व्यक्ति; ३. युवा शिविर के लिए निर्धारित आयुह्वह्व१५ से २५ वर्ष (पहचान प्रमाण-पत्र सहित); ४. प्रतिनिधि शुल्क की अन्तिम तिथिह्वह्व१५ दिसम्बर २०१०

सभी धन-राशि कृपया 'द डिवाइन लाइफ सोसायटी, भीमकांड शाखा' के नाम से बैंक ड्राफ्ट या चैक से भेजें। बैंक ड्राफ्ट या चेक का देय 'स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया (भारतीय स्टेट बैंक), तेलसिंघा (Telesingha) शाखा (एन.पी.टी.सी. कैम्पस, कोड ०६२५७) में होना चाहिए।

पत्र-व्यवहार सूत्र

द डिवाइन लाइफ सोसायटीह्वह्वभीमकांड शाखा, पो.आ. बिजिगोलह्वह्व७५९ ११७, जि. अंगुल, उड़ीसा

सम्पर्क सूत्रह्वह्वअक्षय कुमार दास मो. ०९४३७०४३२२५; निरंजन प्रधानह्वह्व०९४३७०८१२२३

द डिवाइन लाइफ सोसायटी

फोर्थ कवर जनवरी २०११

जीवन-ध्येय

यह दिखलायी पड़ने वाला प्रपंच (संसार और उसका विस्तार) भगवान् के द्वारा निर्देशित तथा नियोजित है। उसमें हमारी एक भूमिका है।

बन्धनमुक्त रहते हुए अपनी भूमिका को कुशलतापूर्वक निभाइए। भगवान् के चरणारविन्द में अपना मन लगाये रखिए। अस्थि-चर्ममय नश्वर देह में आसक्त मत होइए। जिस प्रकार साँप केंचुली छोड़ता है, उसी प्रकार आप देहासक्ति को छोड़ दीजिए। देह-त्याग के लिए सदा तैयार रहिए। पूर्ण रूप से निर्भय बनिए।

जब तक देहाध्यास है, तब तक आत्म-साक्षात्कार सम्भव नहीं है। कृतसंकल्प हो कर कहिए मैं इसी जन्म में आत्म-साक्षात्कार करूँगा।

सुख-दुःख, जन्म-मरण, बन्धन-मुक्ति, लाभ-हानि आदि द्वन्द्व मनोकल्पना हैं। द्वन्द्वातीत बनिए। न आपका जन्म होता है, न मृत्यु। आप अमर आत्मा हैं। जन्म-मरण इस देह तक ही सीमित रहता है।

आप जीवन्त सत्य हैं। अनुभव कीजिए कि आप उस परम सत्ता से अभिन्न है, जो आभासी नाम-रूपों और मिथ्या जगत् का आधार है। आप कारण, देश और काल से परे हैं। ब्रह्म जो प्रकाशों का प्रकाश है में रम जाइए। आप विक्षेप-रहित हो जायेंगे। आप अभेद्य हो जायेंगे। गहन समाधि में अपने अन्तर्ज्ञान द्वारा इसका अनुभव कीजिए।

अब यमराज भी आपसे भयभीत हो कर काँपेगा। आपके निर्देश से ही सूर्य प्रकाशित होगा, अग्नि प्रज्वलित होगी और वायु बहेगी। आपकी आज्ञा से ही इन्द्र, प्रजापति, वरुण आदि अपने-अपने निर्धारित कर्म करेंगे। अब माया आपके वश में रहेगी।

चट्टान के समान दृढ़ रहिए। संसार में सिंह की तरह विचरण कीजिए। संसार-दलदल में धँसी छटपटाती आत्माओं का उद्धार कीजिए। आत्मज्ञान का प्रचार-प्रसार कीजिए। उदार और विश्व-प्रेमी बनिए। जो आपका अहित करे, उसके साथ भी प्रेमपूर्ण व्यवहार कीजिए। व्यावहारिक वेदान्ती बनिए।

अपनी आत्मिक शक्ति में आस्था रखिए। स्वावलम्बी बनिए। संसार से विमुख हो जाइए। सांसारिक सहारों पर भरोसा न कीजिए। किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के बन्धन में बद्ध न होइए। परिग्रह की इच्छा का त्याग कीजिए। अन्तरात्मा से तादात्म्य स्थापित करके मुक्त हो जाइए। अब आप समग्र विश्व को चुनौती दे सकते हैं।

जागिए, उठिए। आत्मानन्द की सरिता प्रवाहित हो रही है। जी-भर कर इस आनन्दामृत का पान

कीजिए। आत्मानन्द के सागर की तुलना में समग्र त्रिलोकी का सुख नगण्य है। आपके लिए अमूल्य आत्म–सम्पदा प्रस्तुत है। इससे प्राप्त होने वाले अलौकिक सुख का आनन्द उठाइए। दूर–सुदूर इस सम्पदा का वितरण कीजिए। स्वामी शिवानन्द

फोर्थ कवर फरवरी २०११

अहिंसा

किसी की हत्या न करना ही प्रायः अहिंसा कहलाता है। इसका पूर्ण–व्यापक आशय है प्राणियों को मनसा–वाचा–कर्मणा मानसिक–शारीरिक पीड़ा या कष्ट न पहुँचाना। किसी को कष्ट या पीड़ा न पहुँचाना अहिंसा का नकारात्मक रूप है। इसका सकारात्मक रूप है सार्वभौमिक प्रेम। अहिंसा है एक ऐसी मानसिक अभिवृत्ति का विकास जो घृणा को प्रेम में रूपान्तरित कर देती है। अहिंसा बलिदान है, क्षमा है, शुद्ध बल है, शक्तिरूपा है।

दूसरों को शारीरिक कष्ट न पहुँचाना अहिंसा का स्थूल रूप है। दूसरों के प्रति घृणा का भाव रखने या उसे प्रकट करने और अप्रसन्नता–द्वेष की भावनाओं को मन में लाने; किसी को क्रोध से घूरने, गाली देने, हानि पहुँचाने तथा कलंकित करने; किसी चुगली करने से अहिंसा का व्रत भंग हो जाता है। कटु और कर्कश वाणी का प्रयोग भी हिंसा है। अपने हाव–भावों से किसी की भावनाओं को आहत करना हिंसा है। अशिष्ट व्यवहार हिंसा है। दूसरों के अप्रिय वचनों का अनुमोदन करना हिंसा है। दूसरों के कष्टों के प्रति उपेक्षा अथवा उन्हें दूर करने में तत्परता का अभाव भी हिंसा के ही रूप हैं। हिंसा के इन सभी रूपों से हमें बचना चाहिए।

यदि आप अहिंसा का अभ्यास करना चाहते हैं, तो आपको निरादर, अपशब्दों आदि को सहन करने की क्षमता रखनी होगी, प्रतिशोध लेने की भावना का परित्याग करना होगा, उत्तेजित किये जाने पर भी शान्त रहना होगा, क्रोधावेश से बचना होगा तथा क्षमाशील बनना होगा। सत्य की रक्षा के लिए प्राण दे देने तक के लिए आपको तैयार रहना होगा। दुर्बल, मृत्यु–भीरु तथा असहिष्णु व्यक्ति अहिंसा का पालन नहीं कर सकते। अहिंसा शक्तिशाली व्यक्ति का कवच है, न कि कायर का। अहिंसा शूरवीरों का गुण है। उनका अस्त्र भी अहिंसा है।

जब भी प्रतिशोध अथवा घृणा की भावना उठे, तो सर्वप्रथम शारीरिक चेष्टाओं और वाणी को संयमित करने का प्रयास करें। इसके बाद दूसरों का अहित करने के अपने विचारों पर अंकुश लगायें। एक ही भगवान् सबमें हैं; सभी भगवान् के रूप हैं यह सोच–सोच कर सबसे प्रेम करें, सबकी सेवा करें, अपनी आत्मा का दर्शन सबमें करें। प्रतिशोध लेने के संस्कार आप पर प्रबल प्रभाव डालेंगे। परन्तु धैर्यपूर्वक सोच–विचार करें। मन को समझायें अपराधी की अभी बाल–बुद्धि है। वह अज्ञानी है। वह क्षमा का पात्र है। तब आपका मन शान्त हो जायेगा। आपकी ओर से विरोध न होने पर आपके विरोधी का भी क्रोध शान्त हो जायेगा। भले ही प्रारम्भ में आप लड़खड़ायें, परन्तु अहिंसा के सिद्धान्त पर दृढ़ रहें। स्वामी शिवानन्द

फोर्थ कवर मार्च २०११

आत्मा

ब्रह्म सबका अन्तर्वासी है। वह आत्मा रूप में सभी प्राणियों में व्याप्त है। जड़-चेतन में एक ही आत्मा व्याप्त है। मन, बुद्धि, काया, रंग आदि में भेद है, परन्तु आत्मा सभी में एक है।

समृद्ध व्यक्ति अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए स्टीमर, रेलगाड़ी, वायुयान आदि रख सकता है, परन्तु वह अपनी निजी आत्मा नहीं रख सकता है। आत्मा सबमें एक ही है। यह किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है।

अनेक में एक ही आत्मा है। विविध नश्वर प्राणियों में एकमेव अनश्वर आत्मा का वास है। जीवन और ज्ञान का उद्गम-स्रोत प्राणियों में अन्तर्स्थित आत्मा ही है, जो अनुभवातीत, अवर्णनीय, अनुनमेय, अचिन्त्य तथा वर्णनातीत है और जो परमानन्दमय तथा सतत शान्तिमय है।

आत्मा और परमानन्द में तत्त्वतः कोई भेद नहीं है। आत्मा परमानन्द ही है। निस्सीम आनन्दमय है और ससीम आनद-रहित। शाश्वत परमानन्द की प्राप्ति अविनाशी आत्मा से ही हो सकती है।

आत्मज्ञान प्राप्त करना शाश्वत पररमानन्द तथा शाश्वत शान्ति का अनुभव करना है। आत्म-साक्षात्कार से ही अमरता, परम ज्ञान तथा चिरस्थायी परमानन्द मिलते हैं। आत्म-साक्षात्कार के बिना मानव का उद्धार नहीं हो सकता। आत्म-साक्षात्कार करने के लिए मानव को सर्व सुखों, प्रियातिप्रिय पदार्थों यहाँ तक कि जीवन का बलिदान करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

भले ही आप दार्शनिक ग्रन्थों के स्वाध्याय में रत रहें, विश्व का भ्रमण करते हुए भाषण देते रहें, अनेकानेक वर्षों तक हिमालय की कन्दराओं में निवास कर लें। प्राणायाम का अभ्यास दीर्घ काल तक करते रहें, जब तक आप आत्मैक्य की अनुभूति नहीं कर लेंगे, तब तक आपका उद्धार नहीं हो सकता। स्वामी शिवानन्द

फोर्थ कवर अप्रैल २०११

ध्यान

ध्यान के बिना ज्ञान–प्राप्ति नहीं होती। ध्यानावस्था में आत्म–मन्थन होता है। परिणामस्वरूप सत्य का दर्शन होता है।

नियमित ध्यान द्वारा आपका आध्यात्मिक विकास होता है। आपकी दिव्य ज्योति प्रखर होती जाती है।

ध्यान से धीरे–धीरे शाश्वत प्रकाश तथा अन्तःप्रज्ञा की प्राप्ति होने लगती है। मन स्फटिक की भाँति पारदर्शी तथा पवित्र हो जाता है। जैसे–जैसे आप अपने अन्दर प्रवेश करते हैं, वैसे–वैसे भौतिक पदार्थों के लिए किये जाने वाले संघर्ष का कोलाहल कम होता जाता है।

ध्यान के स्तर के अपने नियम हैं। वहाँ का संगीत भिन्न है; स्वर–लहरियाँ मधुर हैं। आगे–और आगे, अच्छा–और अच्छा का वातावरण वहाँ सदा बना रहता है।

आध्यात्मिक जागृति की चमक साधक के परिप्रेक्ष्य को बदल देती है। इसके फलस्वरूप वह अन्ततः प्राप्त होने वाली वास्तविक तथा स्थायी प्रसन्नता–शान्ति के लक्ष्य की ओर उत्साहपूर्वक अग्रसर होने लगता है। भौतिक सुख–सुविधाओं की खोज गौण हो जाती है।

ध्यान आपको अपने अस्तित्व की गहराइयों में अन्दर, फिर और अन्दर की ओर ले जाता है स्थूल से सूक्ष्म की ओर, सूक्ष्म से सूक्ष्मतर की ओर तथा सूक्ष्मतर से सूक्ष्मतम अर्थात् परमात्मा की ओर।

भगवान् का ध्यान करते हुए शरीर की चेतना के परे पहुँच कर साधक संसार का स्वामी बन जाता है। उसकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति हो जाती है।

ध्यान अमरत्व और परमानन्द प्राप्त करने का एकमात्र राजमार्ग है। शान्ति और परमानन्द पुस्तकों और देवालयों में नहीं मिला करते। आत्मज्ञान हो जाने पर ही वे मिलते हैं।

आपको अनेक पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। सबसे महान् पुस्तक आपके हृदय के अन्दर ही है। समस्त ज्ञान की स्रोत इस अनन्त पुस्तक को खोलिए। आप सब–कुछ जान जायेंगे।

आँखें बन्द करके इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करें। मन को शान्त करें। उमड़ते हुए विचार को नियन्त्रित करें। मन से विचारों की तरंगें निकाल दें। आत्मा जो प्रकाशों का प्रकाश तथा सूर्यों का सूर्य है की गहराइयों में डूब जायें। समस्त ज्ञान आपके समक्ष प्रकट हो जायेगा। सारी शंकाएँ समाप्त हो जायेंगी। समस्त मानसिक सन्तापों का शमन हो जायेगा। विवादों का अन्त हो जायेगा। केवल शान्ति और ज्ञान ही रह जायेंगे।

गहन ध्यानावस्था में नाम–रूपों का अस्तित्व मिट जाता है। अनन्त देश की चेतना रह जाती है। तदनन्तर वह भी विलीन हो जाती है। यह शून्यता की स्थिति है। फिर अचानक प्रबोधन, निर्विकल्प समाधि का प्रकाश दिखलायी पड़ने लगता है। स्वामी शिवानन्द